मिथिलाक बेटी

मिथिलाक बेटी

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-03-7
Price Rs.160/-
US $ 25 (for abroad)

पहिल संस्करण : 2009

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७
Website :http ://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Typeset by Sh. Umesh Mandal
Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
AJAY ARTS
4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002.
Telephone : 2328-8341, 4362-8341

METHILAKI BETI by Shri Jagdish Prasad Mandal
a play in Maithili Language

समर्पित

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर
बैसल फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ

सादर समर्पित

आ नवविहान अननिहारकेँ सेहो।

आमुख

१.

मिथिलाक बेटी नामसँ ई जगदीश प्रसाद मण्डल जीक पहिल नाट्य रचना छी। प्रस्तुत नाटक समस्या प्रधान अछि। मैथिल समाज आ वृहत रूपमे भारतीय समाजमे जातिपाति तँ छैहे, निष्ठावान कर्मनाथ अपन बेटीक विवाह बिना दहेजकँ करताह ताहि क्रममे दीर्घ कथोपकथनक माध्यमसँ ई देखाओल गेल अछि। विशेषता ई छै जे ई नाटक अपन समाजमे पसरल कुरीतिपर आङुर रखैत अछि। कर्मनाथ विशेष रूपसँ आदर्श चरित्रक रूपमे उभरल मुदा आशा करैत छी जे मंडलजी ग्राम्य जीवनमे रहि कऽ अनेक समस्यासँ ग्रसित आ अनेक भाव स्तरपर जीवित लोक-समाजकेँ अप्पन रचना सभमे एहिना रेखांकित करैत रहताह।

रामेश्वर प्रेम, निर्मली, जिला सुपौल

२.

श्री जगदीश प्रसाद मंडलजीक मिथिलाक बेटी नाटक पढ़ल, एहिमे आधुनिक सामाजिक समस्याक श्री मंडलजी द्वारा नीक चित्रण भेल अछि। आइ समाज दहेजक बीमारीसँ ग्रस्त अछि। एकरा नव जीवन प्रदान केनाइ सभ व्यक्तिक दायित्व अछि। मात्र कर्मनाथ नहि एहि समस्यासँ लड़बाक काज सभ लोकक सामाजिक धर्म अछि। लेखक अपन भावनाक अभिव्यक्ति मात्र कएने छथि। दिशा स्वयं समाजकेँ तकबाक अछि। कथा मूलतः मिथिलाक धरतीक उपज अछि। आ ई खाली मिथिलाक नहि, भारतवर्षक समस्या अछि। नाटक लेल कहल गेल अछि- नाटक जीवनक अनुकृतिकेँ शब्दगत संकेतमे संकुचित कऽ तकरा सजीव पात्र द्वारा एकटा चलैत-फिरैत सप्राण रुपमे अंकित कएल जाइत अछि। नाटक जीवनक सांकेतिक अनुकृति नहि, सजीव प्रतिलिपि छी।

मंडल जी मैथिली साहित्यमे सशक्त उपन्यासकार आ कथाकारक रुपमे नवोन्मेष प्राप्त कऽ रहल छथि। हुनकामे भाव, भाषा, शैली आ मोहाबराक जबर्दस्त जमघट अछि। हमर आकांक्षा अछि जे ओ एहि तथ्य सभकेँ समन्वित रुप दऽ मैथिली साहित्यक श्री वृद्धिमे सहयोग करथि।

रामजी प्रसाद मंडल, निर्मली, जिला सुपौल

नाटकक संबंधमे, अप्पन बात

मैथिलीक फुलवारीकेँ पटेबा लेल मालीक जरूरत तँ अछिये। एहि आशाक संग मिथिलाक प्रसिद्ध नाटककार श्री रामेश्वर प्रेम जी आ श्री रामजी प्रसाद मंडल अपन अमूल्य समए दऽ मिथिलाक बेटी नाटक पढ़ि हर्षसँ भूमिका लिखबाक कष्ट केलनि। ताहि लेल आभारी छी।

श्रुति प्रकाशक दिल्लीक सहयोग एहन उर्जा हृदएमे भरि देलनि जाहिसँ फुलवारीमे फूल लगबैक उत्साह दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि। श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक हंस दृष्टिक लेल कोनो शब्द शब्दकोषमे नहि अछि।

सहयोगी सभकेँ साधुवाद
जगदीश प्रसाद मंडल

अनुक्रम

मिथिलाक बेटी

नाटक

पात्र परिचय

पुरुष पात्र

1.	कर्मनाथ	प्रशासनिक अफसर	45 बर्ख
2.	सोमनाथ	कर्मनाथक पिता	65 बर्ख
3.	रामविलास	सेवा निवृत्ति मिस्त्री	61 बर्ख
4.	विकास	सेवा निवृत्ति शिक्षक	70 वर्ख
5.	नूनू	कर्मनाथक भाए	30 बर्ख
6.	लालबाबू	कर्मनाथक भाए	25 बर्ख
7.	श्रीचन	किसान	45 बर्ख
8.	फुलेसर	कर्मनाथक बेटा	17 बर्ख
9.	राधेश्याम	बोनिहार	35 बर्ख

नारी पात्र

1.	चमेली	कर्मनाथक पत्नी	41 बर्ख
2.	आशा	कर्मनाथक माए	63 बर्ख
3.	माधुरी	रामविलासक पत्नी	58 बर्ख
4.	चम्पा	कर्मनाथक बेटी	19 बर्ख
5.	जुही	कर्मनाथक बेटी	14 बर्ख

पहिल अंक

(कर्मनाथक डेरा। बहराक कोठरीमे कर्मनाथ)

कर्मनाथ : (घड़ी देखि) पौने पाँच बजि रहल अछि, किऐक ने अखन धरि बच्चा सभ पढ़ि कऽ आएल। भऽ सकैत अछि जे बाटमे किछु देखए लगल हुअए। ओना हमहूँ आन दिन पाँच बजेक बादे ऑफिससँ अबैत छलौं, मुदा आइ किछु पहिनहि आबि गेलौं। कोना नै अबितौं, आन दिन तते काज रहैत छल जे ओकरे निपटबैमे अबेर भऽ जाइत छल, मुदा आइ तँ महगीक बिरोधमे, कर्मचारी सबहक हड़ताल, ऑफिसे बन्न कऽ देलक। खैर जे होउ, किछु कालमे तँ सभ आबिये जाएत।

(कहि कुरसीपर बैसि अखबार पढ़ै लगैत)

(चम्पा आ चमेलीक आगमन। दुनूकेँ हाथमे झोरा। एकटा झोरामे चाउर, दाइल, तरकारी आ दोसरमे दूधक डिब्बा, चाय पत्तीक डिब्बा, छोट-छोट पुड़ियामे मसाला, एकटा नोनक पौकेट, आ शीशीमे करुतेल)

चमेली : बजारमे आगि लगि गेल अछि। बाप रे बाप, ऐना कतौ महगी आबए। (दूधक डिब्बा निकालि) जे बौस कीनैले जाउ, अग्गहसँ बिग्गह दाम। कोना लोक कोनो चीज खाएत? जे दूधक डिब्बा बीस रुपैयामे कीनै छलौं, आइ अट्ठाइस रुपैयामे देलक। जे चाहक डिब्बा (डिब्बा देखबैत) दस रुपैयामे दइत छल ओकर दाम बारह रुपैया लेलक। कोनो की एक्के-दुइयेटा चीजक दाम बढ़ल, सभ चीजक दाम अकास ठेकल जाइए। तोहूँमे नोकरियाक जिनगी ! सभ चीज पाइये हाथे हैत। सालमे एक्को दिन ऐहेन अबन्च नइ रहए जइ दिन ककरो नै ककरो तकेदा नइ सुनै छी।

कर्मनाथ : कते अनघोल केने छी। बजैत-बजैत होइए जे बताहि भऽ जाय। जतइ देखू ततइ महगीक चर्च। बजैत तँ सभ अछि जे देशव्यापी महगी भऽ गेल। मुदा एकटा बात कहू जे महगी कतए सँ आएल। ओकरा अबैत कियो ने देखलक। अगर जँ अकासक रास्तासँ हवाइ जहाजपर आएल

तँ ओकरा हवाइये फिल्डपर किऐक ने रोकल गेल। जँ से नहि पाइनिक रास्तासँ आएल तँ पनिया जहाजकेँ बन्दरगाहमे ढूकै किऐक देल गेल। जँ सेहो नहि, माटिएक रास्तासँ आएल तँ ओकरा सीमानेपर ने किअए रोकल गेल। मुदा से तँ किछु नहि भेल, तखन कोन दोग देने, चोर जेँका, महगी चलि आएल। जे एत्ते नमहर देशमे, एत्ते लोककेँ एक्के बेरि चद्दैर जेँका, ओढ़ा देलक।

चमेली : अहाँ अहिना नोन- तेल मिला, बातकेँ बतंगर बना बजै छी। एतबो नइ बुझै छियै जे बड़का-बड़का लोकक कहब छै जे अधिक उपजाबाड़ी भेलासँ चीजक दाम कम होइ छै आ कम भेने दाम बेसी होइ छै। जइसँ दामक घटती-बढ़ती होइ छै। सदिखन रेडिओओ मे कहै छै। आ अखबारोमे लिखै छै जे खेतो आ करखन्नोमे बेसी पैदाबार भेल हैँ। तखन ई महगी किअए भेल?

(माएक बाँहि पकड़ि, डोलबैत)

चम्पा : गे माए, तू जे कहलीही उ सोझका बात कहलीही, जे हमहू हाइये स्कूलसँ पढ़ैत एलौँ। मुदा अइकेँ तरमे असल बात अछि। बड़का-बड़का पाइबला व्यापारी सभ जे अछि ओ खेतोक उपजा आ करखन्नोक बौस कऽ कीनि लइए आ ओकरा नमहर-नमहर गोदाम जे माइटिक उपरो, आ माइटिक तरोमे बनौने अछि तइमे डिक दइए। जइसँ बौस घेरा जाइए। घेरेलासँ बौस निग्हटि जाइए। तखन जा कऽ ओ सभ-व्यपारी कनी-कनी कऽ कऽ बौसकेँ निकालि-निकालि महग कऽ कऽ बेचइए।

चमेली : (मुह चमकबैत) गोदाममे जे बौस नुकबैए, ओकरा लोक, माने जनता आ सरकार नै देखै छै।

चमपा : ऊँह, गे तेहेन ठीमनकेँ रखै छै जे लोकक कोन बात जे कानूनो ने देखै छै। ओ सभ करैत कि अछि जे बड़का-बड़का पनिया जहाजमे समान लादिकेँ समुद्रमे ठाढ़ कऽ दैत अछि। ततबे नहि, जे बौस माइटिक उपरको गोदाममे रहै छै, ओकरा तेहेन कानूनी पेंच लगा दैत अछि जे ओ देशक छी की विदेशक, से बुझबे ने करबीही।

चमेली : (पतिसँ, कर्मनाथ दिस देखि) अहाँ हाकिम छियै कि माइटिक मुरुत। मोटका-मोटका जे कानूनक किताव सभ रखने छियै, ओ झींगुर खाइले। जखैन कानून हाथमे अछि, पुलिस अछि, जहल अछि तखन ओकरा सभकेँ छुट्टा खेलाइले छोड़ि देने छियै। पैछला खेप (सात दिन पहिने) अढ़ाय सौ मे जते समान भेलि रहए ओतबे समान कीनैमे आइ तीनि सौ लागल हैँ अहाँ नोकरिया छी अहूँक दरमाहा एहिना बढ़ैत अछि।

कर्मनाथ : कते, खापड़िक मकई जेँका, भरभराइ छी। होइए जे हम खूब बजनता छी।

चमेली : उलटे चोर कोतबालकेँ डाँटए। अहीं हमरापर आखि लाल-पीअर करै छी। एतबो आखि उठा कऽ नइ देखै छियै जे अहाँकेँ एते दरमाहा अछि, तखन ई रामा-कठोला अछि, जे बेटी विआह करै जोकर भेलि जाइए मुदा हाथमे एकोटा फुटल कौड़ी नै अछि। (कर्मनाथ नमहर साँस छोड़ैत) अहींक आँफिसमे जे कम महीना पबैवला संगी सभ छथि, हुनका सभकेँ की दशा होइत हेतनि। तहूमे कम महीना पौनिहारकेँ धियो-पूतो बेसी होइए। जइसँ परिवारो नमहर रहैत अछि।

(चमेलीक बातक गंभीरता कऽ अकैत कर्मनाथ तीनि बेरि चमेली कऽ उपरसँ निच्चा धरि देखि)

कर्मनाथ : बड़ सुन्दर बात अहाँ बजलौं मुदा हम तँ पढ़बे केलौं नोकरिये करैले। जे आइ बुझै छी भूल भेल। जना हम जमीन बाला परिवारक छी तना हमरा खेतीक संबंधमे पढ़ैक चाहै छल। जते धन माइटिक तरमे साले-साल बिला जाइत अछि ओकर चैथाइयो नोकरीमे नइ कमाइ छी। ततबे नहि, जाधरि सभ अप्पन-अप्पन गामक सम्पत्ति कऽ नहि जगाओत ताधरि आन ठामसँ जे सम्पत्ति आओत, ओ या तँ भीख बनि कऽ आओत वा कर्ज बनि कऽ। खैर जे होउ! हँ, ते कहैत छेलौं जे लगले तँ हम्मर दरमाहा बढ़त नहि। तखन ते दुइयेटा उपाय, दिवस गुजारैक अछि। पहिल अछि जे जेहन चीज-बौस कीनै छलौं, तइसँ कनी झुस माने दब कीनू चाहे जेहेन कीनै छलौं तेहने कनी कम कऽ कऽ कीनू। जँ से नइ करब तँ पाओल जाएब। करजा तरमे पड़ब।

अइले एते आमील किअए पीबै छी। महगी कि कोनो हमरे-अहाँटा ले भेलि हैं, जे एते आफन तोड़ै छी। आ कि सभले भेलइए। जहाँ धरि हाकिमक बात अछि, हाकिमक मतलब ई नहि ने अछि जे, जे मन फुरत से कऽ देबइ। महगी रोकब हमरा सबहक बुताक बात छी, जे रोइक देबइ। जेकर हम नोकरी करै छियै ओकरे काज छियै महगी आनब।

चमेली : तखन झुठे एते लाम-काफ किअए देखवै छियै?

कर्मनाथ : (मुस्की दैत) दरमाहा तरे देखबै छियै। जे होइ छै ओ देखियौ। जखन अकासे फाटल अछि तँ कते सीबै। तखन तँ मेघ तरकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दऽ 'साहोर-साहोर' करैत अछि। (चम्पासँ) बुच्ची, चीज-बौस घरमे रक्खू। (दुनू झोरा उठा चम्पा जाइत अछि) अच्छा एकटा बात कहू जे आन दिन बाजारसँ सबेरे अवै छलौं, आइ किऐक एत्ते अबेर भेलि।

चमेली : (अकचका कऽ) से नइ बुझलियै।

कर्मनाथ : कहबै तब ने बुझबै। हम कि कोनो भगवान छी जे बिनु सुननौं, सुनि जाएब।

चमेली : परसुका गप छियै। बजारमे एकगोटेक बेटीक विआह छलै। बनारससँ बरिआती आएल छलै। बरिआतिओ लाजबाब छलै। मौगी-मरद सभ रहए। खूब निम्मन बैंड पाटी सेहो छलै। बैंड-पाटीमे छौड़हरे कौरनेटिया रहए। कहाँ दन ओकरा मोछक पम्ह अबिते छलै।

कर्मनाथ : कोन खेरहा पसारि देलियै?

चमेली : ऐँह, एतबेमे अगुताइ छी । अस्सल बात तँ आब अछि। खाली सुनैत रहियौ। बड़ी बजनतिरी ओ छौँड़ा छलै। बैंड-पारटीक संग बरियातीओक मौगी-मरद आ बजारोक छौँड़ा-छौँड़ी सभ खूब नाचल। ओहि कौरनेटियाक संग, बजारमे रस्ताक पछबारि भाग जे बड़का गद्दी छै, ओकर बेटी चलि गेलइ।

कर्मनाथ : तब तँ ओकरा बापकेँ, बेटीक विआहमे एक्को-पाइ खरचो ने भेल हेतइ।

चमेली : अहाँ तँ अहिना आगुएसँ लोइक लइ छियै। सुनियौ, कहाँ दन ओ छौँड़ा -कौरनेटिया नोकरी करैए। ओइ छौँड़ीकेँ माए-बाप कतबो रोकलकै, ओ किन्नहु नहि मानलकै। ओकरे संगे चलि गेलइ।

कर्मनाथ : ओ लड़की केहेन छलै?

चमेली : ओइह सभ बजै छलै जे ओ-लड़की कओलेजोमे पढ़ैत छलै आ नाचो सिखै छलैइ। (अफसोस करैत) से देखियो जे ओइ छौँड़ीक गुजर ओहि कौरनेटियाक संग कोना चलतै। कहाँ ओ धनी-मनीकक बेटी आ कहाँ ओ गरीब घरक कौरनेटिया।

कर्मनाथ : (मुस्की दइत) गुजर किअए ने चलतै। एकटा बजनत्री अछि दोसर नचनिया। दुनू मिलि कऽ एकटा पार्टी ठाढ़ कऽ लेत आ गामे-गाम नाचत।

(तहि बीच फुलेसर आ जुहीक आगमन। दुनूक हाथमे किताब) (बेटासँ) बौआ आइ बीस तारीक भऽ गेल। एक तारीक कऽ गाम चलब। तइ बीच तू दुनू भाय-बहीनि अपन-अपन स्कूल कओलेजमे दरखास्त दऽ कऽ दू मासक छुट्टी लऽ लिहह।

फुलेसर : बावू, अगिला माससँ एक घंटाक स्पेशल क्लास चलतै। ओ तँ छुटि जाएत। तँ, मन होइए जे हम एतै रहि जइतौं।

कर्मनाथ : विचार तँ बड़ सुन्दर छह, मुदा असकर रहब नीक हेतह (बिचहिमे चमेली पतिसँ)

चमेली : अहाँ तँ दोसर गप करए लगलौं। एकटा गप सठवे ने कएल आ दोसर लाधि देलियै।

कर्मनाथ : अहाँ अपना बात के थोड़े पछुआइ देवइ। हमही अपना बातकेँ पाछु कऽ लइ छी। बाजू....।

चमेली : हँ, ते वरिआतीक गप्प कहै छलौं ने। उ तँ कौरनेटियाक कहलौं। अहूसँ चोखगर गप आरो अछि।

कर्मनाथ : (मुस्कुराइत) ओइमे कने तेतरीक रस मिला देबइ।

चमेली : अहूँ तँ हद छी। स्त्रीगणक बातकेँ कोनो मोजरे ने दइ छियै।

कर्मनाथ : छुछे मोजर देने की हैत। ओ फड़बो करै तब ने।

चमेली : बुझैमे अहूँ बिहाड़िये छी। नट्टा होइए पुरुख आ कहिऔ मौगीकेँ। अनरनेवा गाछ देखलियै हेँ। मरदनमा गाछ खाली फुलेबे करैत अछि फड़ैत नहि अछि। मुदा मौगियाही गाछ जते फुलाइत अछि तते फड़बो करैत अछि। हँ, तँ सुनू बरिआतीक दोसर गप। बरिआती आबि दुआर लगलै। दुआर लगि, जखन बैठकीमे बरिआती वैसल तँ बरक बाप कहलकै जे पहिने दारु पीबि, डान्स करब तकर बाद विआहक कोनो विधि-वेबहार हैत। मुदा घरवारी ओ बात मानैले तैयारे नइ भेल। दुनूक (बरिआती आ घरवारिक) बीच रक्का-टोकी शुरु भेल। दुनूमे सँ कियो पाछु हटैले तैयारे नहि। ओमहर बैंड बाजा गड़गड़ाइते रहए। दुनूक बीच कहा-कही होइत-होइत पकड़ा-पकड़ी भऽ गेल। पकड़ा-पकड़ी होइतहि पटको-पटकी आ मुक्को-मुक्की शुरु भेल।

कर्मनाथ : (हँसैत) बाह-बाह, तखन तँ कुरथी दौन हुअए लगल हैत।

चमेली : अहाँ तँ बाजै ने दइ छी, विचहिमे लोइक लइ छियै। पटका-पटकी करितहि टेन्टक बाँस घीचि-घीचि एक-दोसरकेँ मारै लगल। कते कऽ कपार फुटलै। तहि बीच हड़हड़ा कऽ टेन्ट खसल। सभ ओइ तरे मऽ झँपा गेल। ककरो निकलिए ने होइ। जहिना महजालमे माछ फँसैत अछि, तहिना।

कर्मनाथ : मरदे-मरदी सभ रहै कि मौगियो सभ रहए।

चमेली : सभ रहै की। कतऽ के ओँघराइल रहै से कोइ देखइ। बड़ी कालक बाद गौँआ सभ समेना हटौलक। समेना तरमे जते गोटे रहै सभ गरदासँ नहा कऽ गरदे रंगमे रंगि गेल। पी कऽ सभ बुत्त रहबे करै। टगैत-टुगैत सभटा बरिआती निफाहेमे जा-जा बैसल। थोड़े खान जब हवा लगलै तब बारह गोटे (बरिआती) अप्पन-अप्पन बैंग-एटेंची लऽ-लऽ जाइले तैयार भऽ गेल। घरवारी सभ गुहरिअबै लगल। मुदा कियो मानैले तैयारे ने।

कर्मनाथ : तब ते बेचारे बरिआती सभकेँ नइ सुतरलै।

चमेलीः ऐँह, एतबे भेलइ। जते बजरुआ पौकेटमार सभ रहै सभ सबहक (बरिआतीक) रुपैइयो, मोबाइलो आ आनो-आनो चीज छीनि कऽ निकलि गेल। रौतुका मसीम रहबै करै।

कर्मनाथ : बरिआतीक सोखड़ि ओराएल कि आरो अछि।

चमेली : एतबेमे अगुता गेलहुँ। अच्छा, एकटा आरो कहि दइ छी। बरिआती सभ तते छुड़छुड़ी आ फटाका अनने रहे जे दुआरपर पहुँचते, गदमिशान उठा देलक। लड़कीक नन्ना, ओहि काल, पैखाना गेल रहथि। एकटा बड़का फटाका ओहि पैखाना कोठरीक देवालमे, एकटा बरिआती मारलक। से कहाँ दन ओ फटाका (बम) गुंगुंआ कऽ तते जोरसँ अवाज केलकै जे ओ बेचारे धड़फड़ा कऽ भागै लगल। केबाड़ बन्न रहै। वेचारेक होश तँ उड़ि गेल रहनि, देवालेमे टकरा गेलाह। कपारो फुटि गेलनि आ चोटसँ चोन्ह आबि गेलनि। चोन्ह अबिते तिलमिना कऽ खसलाह कि दहिना पाएर पैखानाक नालीमे फॅसि गेलनि बड़ी कालक बाद जखन दोसर गोरे पैखना जाय लगलाह कि केबाड़ बन्न देखलखिन। थोड़ै काल ओतइ ठाढ़ रहथि, मुदा कोनो सुनिगुनि नहि बुझि हल्ला केलखिन। तखन केबाडक छिटकिल्ली अलगाओल गेल। केबाड़क छिटकिल्ली अलगबिते, बुढ़ा कऽ अचेत-भेल पड़ल देखलखिन।

कर्मनाथ : (हँसैत) तब तँ बिआहक संग सराधोक जोगार लगि गेलनि।

चमेली : अहाँ तँ अहिना अनका दुखकेँ दुखे ने बुझै छियै।

कर्मनाथ : हम की अहाँ जेँका अनकर सुख देखि कऽ थोड़े नचै छी। सुख-दुखक बीच जिनगीक रास्ता छैक। तेँ, जिनगी जीवैक लेल सुख-दुख अंगेज कऽ चलए पड़ैत छैक। जे यात्री (जातरी) सुखमे मगन भऽ जायत आ दुखमे विचलित, ओ जिनगीक यात्रा कोना सफर कऽ सकैत अछि। छोड़ू दुनियादारीक गप। अप्पन जिनगीक गप करु।(चम्पाक आगमन) भने चम्पो आबिये गेलि।

फुलेसर : दू मासक छुट्टी लऽ कऽ की करबै, बावूजी?

कर्मनाथ : चम्पाक विआह करैक विचारसँ गाम जाएब। मुदा तू जे कहने छेलह जे स्पेशल क्लास चलत, तँ रहि जाइक विचार होइए। बड़ सुन्दर विचार छह, मुदा ई बात बुझै पड़तह जे हर मनुष्य कें पहिल कर्तव्य होइत जिनगीक रक्षा। जीबैत रहबह, तखने बुझि पड़तह जे दुनिया छैक, नहि तँ किछु नहि। पढ़ैक खियालसँ तोहर विचार नीक छह। मुदा एकटा बात कहि दइ छिअ। हम अफसर छी तँ विशेष अनुभव अछि। अखन अप्पन परिवारक बीच छी, तँ बजैत एक्को पाइ असोकर्ज नै भऽ रहल अछि। जँ अखन सरकारक कुरसीपर रहितौं वा लोकक बीच, तँ नहि बजितौं।

जुही : बावूजी, कते काल सरकारी आदमी रहै छियै?

कर्मनाथ : बाउ, जे सवाल पुछलह, ओकर उत्तर साधारण नइ अछि। अखन परिवारक काजक विचार करैक अछि, तँ तोरा सवालक उत्तर नीक नहाँति नइ दऽ सकवह। निचेनमे दोसर दिन बुझा देबह। अखन थोड़े इशारामे कहि दइ छिअह। अखन जे अपना देशक स्थिति अछि, एहिमे क्यो सुरक्षित नहि अछि। जना सभ दिन अपहरणक घटना सुनै छहक। घटनामे की सुनै छहक जे पाइक दुआरे अपहरण (फिरौती) होइ छै। इहो होइ छै। मुदा एतबेटा नइ होइ छै। आखि उठा कऽ देखवहक तँ बुझि पड़तह जे बिनु पाइओवलाक अपहरण होइ छै। ततबे नहि, पाइबला तँ पाइ दऽ कऽ जानो बचा लइए मुदा बिनु पाइवलाक जानक अपहरण होइ छैक।

जुही : इ बात लोक कहाँ बजैए।

कर्मनाथ : लोक कऽ अखवार आ रेडिओ पढ़वै छैक। तँ, जे अखबारमे पढ़ैत अछि से दोसर कऽ पढ़बैत अछि। मुदा अस्सल बात एहिसँ आगू अछि। जे थोड़-थाड़ कहियो रेडिओओ आ अखवारो कहियो दइत अछि आ बेसी नहिये कहैत अछि। हँ, तँ कहै छेलियह जे अपहरण भेलापर बिनु पाइवलाक जान नहिये बँचैत अछि। तँ, ई बात बुझै पड़तह जे के केकर जान लइले, खून पीबैले तैयार अछि से कहब कठिन। (बेटासँ) तू कहबह जे अहाँ तँ गलत काज कहियो ने केलौं आ ने करैत छी, तखन हमरा किऐक किछु हएत। मुदा एहि सवालक जबाब

बुझैले एहि बातपर नजरि देमए पड़तह जे जहिना दिनक विपरीत राइत होइत अछि। धनिकक गरीब आ सुखक विपरीत दुख होइत अछि। मुदा एकरे उलटा कऽ देखवहक तँ बुझि पड़तह जे जहिना दिनक विपरीत राइत होइत अछि तहिना राइतियोक विपरीत दिन होइत अछि। तहिना धनिको आ सुखोक होइत अछि।

जुही : बावूजी, हम ई बात नइ बुझि सकलहुँ जे विपरीतक माने की?

कर्मनाथ : बाउ, अखन हम दोसर काजक गप करै चाहैत छी, तँ, अखन तोरा प्रश्नक जबाव नीक जेँका नहि दऽ सकबह। मुदा तोरा जे शंका भऽ रहल छह, ओ हमहुँ बुझि रहल छी। अखन एतबे बुझह जे दिन-राति प्रकृतिसँ जुड़ल अछि, तँ ओ हेबे करत। एक-दोसरक विपरीत रहबे करत। मुदा धनी-गरीब आ सुख-दुख से नहि अछि।

जुही : बावूजी, अहाँ जे कहलियै तइसँ हमर मन नै मानलक।

(जुहीक बात सुनि कर्मनाथ मने-मन सोचै लगलथि जे जखन हाइ स्कूलक बच्चाकेँ हम संतुष्ट नहि कऽ सकलहुँ, तखन परिवार आ समाज तँ बड़ नमहर होइत अछि। सोचि-बिचारि)

कर्मनाथ : बाउ, एकठाम भोज भेलइ। भोज नै भेलइ, पाँच गोटे आन मुलुकसँ एक गोटे एहिठाम ऐलखिन। आन मुलुकक रहने नमहर पाहुन भेलखिन। ओ घरवारी (जिनका ऐठाम आएल रहनि) खाइ-पीबैक नीक ओरियान केलनि। आन मुलुकक पाहुन बुझि अपनो दस सवांगकेँ खाइक नोत देलखिन। खाइक सभ बरतन (थारी, लोटा, गिलास, बाटी, चम्मछ) सोनाक रहैक। खेला-पीलाक बाद अप्पन (घरवारीक) एकटा सवांग एकटा चम्मछ चोरा कऽ जेबीमे रखि लेलक।घरवारी देखि लेलखिन। देखला बाद घरवारीक मनमे हुअए लगलनि जे जँ कहीं पाहुनो सभ देखि नेने होथि। मुदा दोसर दिशि अप्पन मुलुक आ सवांगक प्रश्न छलनि। असमंजसमे वेचारे पड़ि गेलाह। तत्-मत् करैत ओ (घरवारी) एकटा मैजिक केलनि।

जुही : खाइये कालमे मैजिक केलनि।

कर्मनाथ : हँ। आगू सुनह। मैजिक ओ ई केलनि जे कहलखिन- जनिका जेबीमे जे वस्तु अछि से हम देखै छी। सभकेँ आश्चर्य भेलनि। अप्पन सवांग दिशि इशारा करैत कहलखिन जे हुनका जेबीमे एकटा चम्मछ अछि। जइ सवांगक नाम कहलखिन, ओ भड़कि उठलथि। दोसर गोरे, जेबीमे हाथ दऽ चम्मछ निकालि टेबुलपर रखि देलखिन। तेँ बाउ, तू जे प्रश्न केलह ओ अहूसँ नमहर मैजिक अछि। आब तू चुप रहह। आगूक गप बढ़वै दाय।

जुही : भैयाक सवालक जबाव अधखड्डुऐ रहि गेल छनि।

कर्मनाथ : बौआ, समय ऐहन परिस्थिति पैदा कऽ देलक हेँ जे कियो अपना कऽ सुरक्षित नहि बुझैत अछि। सचमुच अछियो नहि। अखन एकटा अपहरणक चरचा केलियह। ऐहन-ऐहन अनेको अछि। एक राज्यक लोक दोसर राजवला कऽ दुसमन बुझैत अछि। दुसमनक संग जेहेन बेबहार होइ छै, से करबो करैत अछि। ततबे नहि, एक सम्प्रदायवला दोसर के दुसमन बुझैत अछि। तहिना एक जाइतिक लोक दोसरक बुझैत अछि।

जुही : तना ओझड़ा-पोझड़ा कऽ कहलियै जे हम किछु बुझबे ने केलहुँ।

कर्मनाथ : अप्पन देश विभिन्न राज्य, विभिन्न सम्प्रदाय, आ सैकड़ो जाइतमे बँटल अछि। उपरसँ सभ कहैत अछि जे हम सभ एक देशक बासी छी। तेँ, मिलि-जुलिकेँ रहैक अछि। मुदा से थोड़े अछि। एक राजवला दोसर राजवलाकेँ मारि-पीटि, बहू-बेटीक इज्जत लुटि, कमाइल पाइ लुटैक पाछु लागल अछि। तहिना आरो सभ अछि।

जुही : तइयो अहाँ ओझराइले बात कहलियै।

(एक टकसँ जुहीपर नजरि राखि कर्मनाथ कने काल गुम्म रहि)

कर्मनाथ : बाउ, अखन धरि तू सभ शहर-बजारमे रहलह, तेँ नहि देखै छहक। हमरा तँ गमैया लोक सभसँ गप-सप होइए किने। सुनह, गाम सभमे की होइ छै; एक जाइतिक लोक (जे बुतगर अछि) दोसर जाइतिक लोकक (जे अब्बल अछि) बहू-बेटीकेँ दिन-देखार इज्जत लुटैए। तहिना एक सम्प्रदाय वला दोसर सम्प्रदायवलाकेँ।

फुलेसर : (नमहर साँस छोड़ैत) बाबूजी, जे बात अहाँ आइ बिकछा कऽ कहलियै, ओइ बात दिशि हम्मर नजरि आइ घरि नहि गेल छल।

कर्मनाथ : अगर जँ अखन धरि तोहर नजरि एहि बात दिशि नहिये गेल छेलह तँ ओहो कोनो बड़ भारी गलती नहिये भेल छेलह। किऐक तँ अखन धरि तू किताबक बीच रहलह, दुनिया दारीक बात थोड़े बुझै छहक। मुदा एकटा बातपर सदिखन आखि, कान ठाढ़ कऽ कऽ राखै पड़तह जे सिर्फ किताबेक ज्ञानसँ जिनगी नहि चलैत अछि। जिनगीक लेल दुनू (किताबो आ बाहरियो) ज्ञानक जरुरत होइत अछि।

फुलेसर : बाबूजी, अखन देखै छियै जे छोटका स्कूलक विद्यार्थी सऽ लऽ कऽ कओलेज धरिक विद्यार्थी, सिनेमा आ खेल-कूदक सभ बात जनैत अछि मुदा अप्पन परिवार, समाज आ वंशक विषयमे किछु नहि जनैत अछि। बहुत दिनसँ मनमे अवैत अछि जे अप्पन परिवारक संबंधमे अहाँसँ पूछी। मुदा समयक ऐहेन उटपटँग रुटिंग बनि गेल अछि जे पूछैक गरे ने लगैए।

कर्मनाथ : (मुस्कुराइत) अपनो ई इच्छा दस वर्ख पहिनेसँ मनमे अछि, किऐक तँ एहि शरीरक कोनो ठेकान नहि अछि। कुम्हारक बनाओल माइटिक काँच वरतन जेँका मनुक्खो अछि।

(बिचहि मे)

चमेली : बेटा फुल, एकटा बात आरो जोड़ि दहक जे दू परिवार, दू समाज आ दू वंशक योगसँ नव परिवारक उदय होइत अछि। तँ, दुनूकेँ जानव जरुरी अछि।

कर्मनाथ : (हँसैत) हँ ते पहिने अहीं परिवारक खेरहा कहै छी। पुरुष-नारीक संयोगसँ नव मनुखक जन्म होइत अछि। एकर अतिरिक्त जे सभ अछि ओ बाहरी उपरी छियै। तँ, अखन एतबे कहब। मुदा हमरा संग जे अहाँक विआह भेल, ओ बच्चा सभकेँ जरुर कहि देबइ।

जुही : (थोपड़ी बजवैत) पहिने यैह कहियौ बावूजी। तखन आन बात कहबै।

कर्मनाथ : (मुस्की दइत पत्नीसँ) हम अहाँ छोड़ि बच्चा सभकेँ कहै छियै। तँ, बीचमे रग्गड़ नहि ठाढ़ कऽ देवइ।

चमेली : (मुह चमकवैत) हम बड़ रगड़ी छी, की ने।

कर्मनाथ : अपना की बुझि पड़ैए। अहीं सन लोकक संबंधमे कहल गेल अछि जे नाक नै रहैत तँ की सभ खेइतहुँ, तेकर कोनो ठीक नहि।

चमेली : छुछुनरि होइए पुरुख आ दुसिऔ मौगीकेँ।

कर्मनाथ : पुरुष की छुछुनरि होइए?

चमेली : बजार जाइ छी तँ देखै छियै जे जहाँ पुरुख कोनो स्त्रीगणकेँ देखत कि अनेरे ओकर जाँघक दिनाइ चुल-चुला लगै छै।

कर्मनाथ : अहाँ कोनो डॉक्टर छी जे दिनाइ देखि दवाई सोचै लगै छी। अहाँ दिनाइ देखै छियै कोना?

चमेली : आँखिये छियै। ओकरा पकड़ि कऽ रखबै, से हैत।

कर्मनाथ : अच्छा बुझि गेलहुँ। अहूँकेँ अप्पन विआहक बात सुनैक मन अछि, तँ सुनू। जखन हम बी.ए. पास केलहुँ, तखन बावूजी विआह करैक चर्च चला देलनि। सभ दिन दू-चारि कन्यागत अबै लगलथि। हम दरभंगेमे रहैत रही। इमहर बावूजी एकठाम विआहक बात पक्का कऽ लेलनि। जे हम पछाति बुझलियै। कहाँ दन ओ कन्यागत भरिपोख द्रव्य आ कन्याक खोंछिमे बीस बीघा जमीन देवाले तैयार रहथि। मुदा अंतिम बात हमरेपर अँटकल रहै। जेठ मास। गोटे-गोटे गाछमे गोटि पंगरा आम फड़ल रहै नइ तँ नहिये जैंका फड़ल रहै। दस बजेक बाद बाधमे लू नचै लगै। जना बुझि पड़ै जे खेत सभमे आगिक चिनगारी जैंका नाचि रहल छै। हम खा कऽ दरवज्जेक ओसारक कोठरीमे रही। ओसारक दुनू भाग (उत्तरो आ दछिनो) दूटा कोठरी बनल रहै आ बीचमे खाली रहै। ओहि खाली ओसारमे एकटा मोथीक सोफ (नमहर बिछान) विछाओल रहैत छलै। सतासीक बाढ़िमे ओ दरबज्जा खसि पड़ल। करीब बारह बजे तोहर (बेटा-बेटी) नन्ना आबिकेँ, ओहि सोफपर चारु नाल चीत भऽ कऽ ओंघरा गेलाह। ओंघरेलापर जे बिछान (सोफ)

खड़बड़ेलइ तँ हमहू कोठरीसँ बहरेलौं, तँ देखलियै जे एक गोटे दुनू बाँहिकँ मोड़ि माथ तर मे नेने, आँखि मूनि कऽ पड़ल छथि। आ कनी हटा कऽ मत्थे सोझे एकटा बटुआ रखने छथि।

जुही : बटुआ केहेन होइ छै, बावूजी?

कर्मनाथ : (मुस्कुराइत) बटुआ कपड़ाक बनै छै। दरजी सभ सीवैए। कोठरीनुमा ओहिमे हन्ना सभ बनल रहै छै। जेकरा लोक डॅरक डोराडोरिमे बान्हि कऽ रखैत अछि। ओहिमे अमलोक वस्तु आ पाइयो-कौड़ी रखैत अछि। हमरो हड़ल ने फुड़ल, ओतइ वैसि कऽ बटुआ उठा देखै लगलियै। ऐँह, की कहवह अजीव खजाना बटुओ होइए। जहिना लोक पीढ़ी, केबाड़ आ सन्दूक सभमे रंग-बिरंगक चित्र बनबवैए तहिना ओहि बटुआक उपरमे एकटा इनार बनौल रहै। ओहि इनारपर पाँचटा जनिजातिक चित्र बनाओल रहै। एक गोटे इनारमे डोल खसबैत। दोसर उगहनि पकड़ि डोल उपर करैत। तेसर काँखतरमे घैल रखने। आ बाकी दुनू इनारक दुनू भाग ठाढ़ भऽ कऽ बाँहि फड़का-फड़का झगड़ा करैत अछि।

फुलेसर : इनारो-पोखरिमे लोक झगड़ा करैत अछि।

कर्मनाथ : (ठहाका मारि) हौ, इनार-पोखरि तँ स्त्रीगणक लड़ैक अखड़ेहे छी (पत्नी दिशि देखि, मूड़ी डोला हँसि) उठा-पटक तँ स्त्रीगण कम करैत अछि मुदा गरिखर बेसी होइए। सात पुरखाक नाम आ सातो पुरखाकँ कोन गारि ककरा लगतै, से सभके बुझल रहैत अछि।

चमेली : (मुह चमकवैत) इनार-पोखरि ढाठैए पुरुख आ झगड़ाउ होइत अछि मौगी। (मूड़ी डोलबैत) निरलजकँ ने लाज, पेट भरला से काज। पुरुख नीक रहतै ते मौगी अधला भऽ जेतइ, की?

फुलेसर : बटुआ जे उठौलियै से ओ नइ वुझलनि।

कर्मनाथ : (उदास होइत) ओ कोना बुझितथि। ओ कोनो रौदक जरल रहथि, ओ तँ जिनगीक ठोकरसँ घायल बटोही रहथि। चिन्ता आ दुखक अथाह समुद्रमे डूवल रहथि। जहिसँ निकलैक कोनो रस्ते ने देखथि।

जुही : बटुआमे की सभ रहनि?

कर्मनाथ : (मुस्कुराइत) जखन बटुआक डोरा दुनू हाथे पकडि खेललियै कि भक दे एक्के बेरि नअटा मुह बाबि देलक। नवो हन्नामे नअ रंगक बौस। पहिल हन्नामे नोइसिक डिब्बा। नोइसिक डिब्बाकेँ उठाबितहि गमकि उठल। गमक देखि हमरो मन भेल जे कनी निकालि कऽ नाकमे लगा ली मुदा फेरि मनमे आएल जे नाकमे नोइस लगाएव तँ छीक हेबे करत। जँ कहीं जोरसँ छिक्का भेल आ ओ आँखि खोललनि, तँ देखिये जेताह। तेँ नोइस नइ लगेलहुँ।

फुलेसर : नोइस नइ लगेलियै?

कर्मनाथ : हँ, लगौलियै। पाछु काल । दोसर हन्नामे छलिया सुपारी। शुद्ध कालापानी, चारिटा। खूब नमहर-नमहर। तेसर हन्नामे पानक पनबट्टी। चारिममे दूटा जरदाक डिब्बा। एकटा हरिशंकर काली-पत्ती आ दोसर पान सौ नम्बर, पीली पत्ती। पाँचममे चानीक रुपैया। ओ नीक जैंका नइ देखलियै। मुदा कम्मे बुझि पड़ल। छठममे लंग, इलायची। सातममे बिलेती तमाकुल पात। आठममे एकटा चुनौटीमे चून आ दोसर शीशीमे बुकल खएर। नवममे रामपट्टीक बनाओल सरोता। नवो हना कऽ देखि नोइसिक डिब्बासँ कने नोइस निकालि, चुटकीमे रखलौं। बटुआ बन्न कऽ कऽ रखि नाकमे नोइस लगेलहुँ। नोइस लगविते खूब जोरसँ छिक्का भेल। जहाँ छिकलौं कि ओ फुर-फुरा कऽ उठि, बैसि रहलाह। हमरा नाकमे सुरसुरी लागल तँ नाक मलैत रही।

फुलेसर : नाना किछु बजलाह नहि?

कर्मनाथ : ने ओ किछु बाजथि आ ने हम किछु पुछिएनि। हुनक बगए आ शरीरक रुप देखि हम्मर बोली बन्न रहए। मनमे ढ़ेरो रंगक सवाल सभ उठैत रहए। जहिना कोनो राही-बटोही बिनु खेने-पीने रास्ता-बाट चलैत रहैत अछि, मुदा रुकैक नाम नहि लइत, तहिना बुझि पड़ल। बड़ी कालक बाद, मनकेँ असथिर करैत पुछलिएनि, अपने कतऽ रहै छियै? नीक जैंकाँ नहि चीन्हि रहल छी। आखिक नोर पोछैत ओ कहलनि, बौआ, अहाँ अखन बच्चा छी, तेँ हम अप्पन सभ बात तँ नहिये कहब, मुदा

एते जरुर कहब जे जइ धनुष कऽ तोड़ि राम वीर भेलाह, ओहि धनुष कऽ मिथिलाक बेटी-सीता बामा हाथे उठा बाहरै-नीपै छलीह। ओहि मिथिलाक आइ एते पतन भऽ गेल अछि जे बेटीक हाथ पकड़िनिहार, बिना रुपैया नेने, कियो नहि अछि।

फुलेसर : (चैंक कऽ) बड़ भारी बात कहलनि, बावूजी।

(चमेली, चम्पा आ जुहीक आखिमे नोर आबि गेल)

कर्मनाथ : हमर करेज दहलि गेल। आखि भारी भऽ गेल। मुहक बकार बन्न भऽ गेल। हम्मर आखि कखनो हुनक मुह देखैत तँ कखनो बगए। तहि काल पितो जी ऐलाह। पिताजीकेँ देखितहि ओ, माने तोहर नन्ना कहलखिन, जे एकटा कुल-शील कन्याक भार उताड़ि देल जाए। जइपर पिताजी तुरुछ भऽ कऽ जवाब देलखिन जे कुल-शील लऽ कऽ हम धो-धो चाटब। द्रव्यक युग छी। टका धर्म टका कर्म छी। अहाँ अप्पन बेटीक प्रति कते खर्च करै चाहैत छी। जहिना पाइन (तरल) बरफ बनैत, तहिना हम्मर कोमल हिरदय कठोर बनै लगल। मनमे अन्हर-बिहाड़ि उठै लगल। मुदा चुप रही। तोहर नन्ना कहलखिन, हम्मर हालत पाइ-कौड़ी खर्च करै जोकर नहि अछि। अपनेक पाएर पकड़ि कहै छी जे एकटा मुइल बापक बेटीक भार उताड़ि देल जाय। द्रव्यसँ तँ अपनेक इच्छा पूर्ति हम नहिये कऽ सकब, तखन एकटा नोकरनी परिवारमे जरुर देब। हुनकर बात सुनि पिताजी उठि कऽ बाड़ी दिशि विदा भऽ गेलखिन। हमरा हुअए जे बोम फाड़ि कऽ कानी। मनमे विचित्र स्थिति पैदा लऽ लेलक। एक दिशि पिता दोसर दिशि निरीह कन्या।

फुलेसर : नाना बैसिले रहलथि कि उठि कऽ चलि गेलाह।

कर्मनाथ : बैसिले रहलथि। उठैक साहसे ने होइन। मुह करिछौन भेलि जाइत रहनि। लगले-लागल हाफी करथि। मिरमिराइते हम पुछलिएनि, अपने कते खर्च करए चाहैत छिअए। ओ कहलनि, बौआ, जखन अहाँ पुछलहुँ तँ हम अप्पन दुख कहै छी। हम दू भाइ छी। हमरासँ जेठ भाइ छथि। हम पढ़लहुँ-लिखलहुँ तँ बेसी नहि मुदा अखड़ाहापर जरुर

जाइ छलौं। दुनू भाइक बीच जखन बँटवारा हुअए लगल तखन ओ खेत-पथार तँ बाँटि देलनि, मुदा घरक बरतन-वासन, गहना-जेबड़ आ नगद-नारायण किछु नहि देलनि। एक दिन हम खिसिया कऽ कहलिएनि। हुनको दाँव-पेंचक दाबी। ओहो ओहिना जोरसँ कहलनि जे जे बँटैवला छेलह से बाँटि देलियह आब किछु ने देबह। हमरो अखड़ाहा परहक ताव रहबे करए। दरवज्जेपर उठा कऽ पटकि पान-सात थापर मुहमे लगा देलिएनि। कहि दुनू हाथ माथपर लऽ चुप भऽ गेलाह।

फुलेसर : किअए चुप भऽ गेलाह?

कर्मनाथ : थोडे खानक बाद फेरि कहए लगलाह। हौ बाउ, पेंच-पाँच तँ हम जिनगीमे कहियो सीखिलहुँ नहि। कोटमे केसो कऽ देलक आ गौंवाँ सभकेँ मिला लेलक। दुनू दिशि हम फँसि गेलहुँ। बलजोरी लोक सभ जजातो काटि लिअए, बाँसो-गाछ काटि लिअए आ आमो तोड़ि लिअए। तारीकपर जाइ तँ एक के तीनि ओकिलो-मुन्सी ठकि लिअए। केस हारि गेलहुँ। जहि कऽ चलैत छह मास जहलोमे रहलौं। कोनो कर्म बाकी नइ रहल। सभ सम्पत्ति नष्ट भऽ गेल। हारि कऽ बेटा पड़ा कऽ दिल्ली चलि गेल। एहना स्थितिमे बेटी विआह करै जोगर भऽ गेल अछि।

चमेली : (नोर पोछैत) हे भगवान, ऐहेन दिन ककरो नइ दिहक।

(चम्पा आ चमेली माइयक मुह तकैत आ फुलेसर बापक मुह)

फुलेसर : बाबा घुरि कऽ एलखिन आ कि नहि?

कर्मनाथ : ने घुरि कऽ एलखिन आ ने कतौ गेलखिन। अंगनाक पछुआरक रस्ता देने आबि कऽ अढ़मे बैसि गेलखिन।

फुलेसर : सोझामे किअए ने एलखिन?

कर्मनाथ : से तँ ओ जानथि। मुदा हम्मर मन हुनका (पिता) सँ हटै लगल आ हिनका (ससुर) दिशि झुकै लगल। मने-मन सोचए लगलौं जे अखन जँ हम बलजोरी (पिताक बिना विचारे) विआह कऽ लइ छी तँ परिवारमे

जबरदस विबाद ठाढ़ हैत। जँ विआह करैसँ इनकार करै छी तँ दरबज्जाक इज्जत चैपट हैत।

जुही : दरबज्जाक इज्जत की छियै?

कर्मनाथ : बाउ, दरवज्जा अंगनाक नाक होइत। आंगन व्यक्ति-विशेषक वुझल जाइत, जबकि दरवज्जा दसगरदामे बदलि जाइत अछि। आंगन आंगनवालीक (पत्नीक) बुझल जाइत जबकि दरवज्जा द्वार (दुआर) होइत। ककरो आंगनमे पुरुखक आगमन आंगनवालीक आदेशसँ होइत जबकि दरवज्जाक लेल आदेशक जरुरत नहि। सबहक लेल सदिखन रहैत। पुरुखक परीछाक (परीक्षाक) केन्द्र दरवज्जा छी। परिवारमे जेहेन पुरुख रहत दरवज्जाक इज्जत ओहि रुपक होइत। हमर-अहाँक पुरुखा एहि इज्जतकेँ वुझै छेलखिन, तेँ, बहुतो गोटे एहि प्रतिष्ठा कऽ उच्च सीढ़ी धरि मर्यादित बना कऽ रखलनि। ऐहन-ऐहन हजारो पुरुख भेल छथि जे कनैत आइल मनुक्खकेँ दरवज्जापर सँ हँसा कऽ विदा केलनि। अइह बात (विचार) हमरो मनमे आएल।

जुही : ई विचार बावामे किऐक ने एलनि?

कर्मनाथ : ई तँ ओ जानथि। मुदा हमरा मनमे जरुर भेल जे जहिना तोहर नन्ना कनैत ऐलाह तहिना हम हँसा कऽ विदा करबनि। चाहे परिवारमे जे होय। फेरि मनमे आएल जे जाधरि परिवारसँ नीच विचार हटत नहि ताधरि उच्च विचार आबि कोना सकैत अछि। ई तँ कोनो जादू-टोना नहि छियै। बेवहार छियै। जे सोझे कर्म (काज) सँ जोड़ल अछि।

फुलेसर : तकर बाद की केलियै?

कर्मनाथ : (गंभीर होइत) थोड़े काल मने-मन विचार केलौं जे अखन तँ हमरो स्थिति काटल गाछक छाहरिये जेँका अछि। तेँ विआह करैसँ पहिने अप्पन आस्तित्व कायम करी। अगर जँ से नहि कऽ पहिने विआहे कऽ लेव आ कनियाँ घर लऽ आनब तँ ओहने दशा कनियाँक संग हेतनि जहिना अनभुआर चिड़ैक दशा चिड़ैक जेरमे होइत। तेँ जरुरी अछि जे पहिने अप्पन जिनगी कऽ अपना हाथमे लऽ कऽ चली। मुदा ई हएत कोना? सोचैत-विचारैत तय केलौं जे आब एहि घर कऽ छोड़ि कतौ

नोकरी करी। नोकरी करैक विचार मनमे अबितहिं हम कहलिएनि जे एहिठाम अपनेक जे नोर खसल ओ अपनेक उद्धार करत।

जुही : (हँसैत) तब तँ नानाक मन खूब खुशी भेलि हेतनि?

कर्मनाथ : ओ बड़ पारखी रहथि। किछु बाजथि नहि मुदा हमरे मुहक बात सुनए चाहथि। जबकि हमरा मनमे भीतरसँ समुद्रक लहरि जँका उठए। हुअए जे की कहिएनि, कत्ते कहिएनि जे ओ ठहाका मारि हँसथि। हम कहलिएनि जे अपने भोजन क-ए लेल जाउ। ओ कहलनि, बौआ अहाँ अखन बच्चा छी तँ अपना ऐठामक विधि- बेबहार नइ बुझै छियै। अखन हम कन्यागत छी, कोना भोजन करब। मन मे भेल जे कहि दिअनि, जे - जौर जरि गेल मुदा ऐँठन नहि गेल। हम भुखल बुझिकेँ कहलिएनि आ ओ शास्त्र पढ़वै लगलथि। मुदा हम चुप्पे रहलहुँ। फेरि कहलिएनि जे कमसँ कम एक गिलास पानि पीवि लेल जाउ। पाइनिक नाम सुनि धड़फड़ा कऽ कहलनि, हँ, ई भऽ सकैए।

जुही : चाह-ताह पीबैले नइ कहलिएनि?

कर्मनाथ : अपना ऐठाम (इलाका) तँ चाहक चलनि (1935 ई0 क बाद भेल) आब भेलि हैं। जखन पानि पीबैक लेल राजी भऽ गेलाह, तखन सोचलौं जे भरि मन सरबत पीआ देबनि। मुदा बाउ, अपना ऐठाम गिलासमे पानि बच्चा पीबैत छल चेतन लोटामे पीबैत छल। एकटा बड़का लोटा अपना घरमे अछि, जइमे तीनि किलोसँ बेसिये पानि अँटैत अछि। ओहीमे भरि लोटा सरबत बना कऽ अनलौं आ आगूमे रखि देलिएनि। लोटा देखि ओ हँसि देलनि।

जुही : सरबत देखिकेँ हँसलथि आ कि मने खुशी भऽ गेल रहनि।

कर्मनाथ : से तँ ओ जानथि। मुदा तखनसँ हँसी मेटेलनि नहि। लोटो भरि सरबत पीबि लेलनि। सरबत पीबि, बटुआ खोलि पान निकालि मस्तगर खिल्ली लगा, मुहमे लैत कहलनि जे आब मन हल्लुक भऽ गेल। जते हुनकर मन हल्लुक होइत जाइन तते हमरो मनमे शान्ति अबैत गेल। मुदा करेज सक्कत हुअए लगल। हम कहलिएनि, किछु दिन अपनेकेँ प्रतीक्षा करै पड़त। मुदा एते अखन जरुर कहि दइत छी जे जहि

काजक लेल अपने परेशान छी ओ परेशानी जरुर मेटा जाएत। एते सुनितहि ओ बजै लगलथि जे हम सभ मिथिलाक बासी छी तँ मैथिल छी। हमरा सबहक पूर्वज नारीक जिबठ (साहस) कँ जनैत छेलखिन। किऐक तँ जिनगी-जिनगी भरि नारी परपुरुषक मुह नहि देखलनि, भलेहीं ओ बाल-विधवे किऐक ने भऽ गेल होथि। जे हमर धरोहर सम्पत्ति छी। हँ, आइ भलेहीं समाजक विकृतताक चलैत किछु अनुचित जँका जरुर भऽ गेल अछि। मुदा अस्सल तथ्य सभकँ बुझैक चाही। हम दुनू गोटे गप-सप करिते रही कि ओमहर-कोठरीमे पिताजी गरजि कऽ अन्ट-सन्ट बजै लगलथि।

फुलेसर : अढ़ेसँ बावा बजथि, सोझामे किअए ने ऐलाह।

कर्मनाथ : से तँ ओ जानथि। ओ माने तोहर नाना उठिकँ विदा हुअए लगलाह कि हम गोड़ लगलिएनि। गोड़ लगितहि ओ बटुआ खोलि पाँचटा रुपैया हमरा हाथमे दैत कहलनि बाउ, मिथिला अखनो पुरुष-विहीन नइ भेलि अछि, आ ने हैत। आब अहीं सबहक (नव युवक) हाथमे सभ कुछ अछि, तँ, जेना कऽ आगू लऽ चली। कहि चलि गेलाह।

फुलेसर : अहाँ की केलिए?

कर्मनाथ : बी. ए. धरि हम कहियो, कोनो क्लासमे फेल नहि केने छलहुँ, तँ मनमे पढ़ैक उत्साह एक्को पाइ कमल नहि छल। सोचलौं जे जखन नोकरी करैक अछि तखन एक बेरि प्रशासनिक परीक्षामे बइस कऽ देखियै। नइ पास करब तँ नइ करब। दू वर्ख मेहनत कऽ परीक्षामे बैसलौं। पास केलौं। पास केलाक बाद विआह केलौं। आब पैछला खिस्सा-पिहानी छोड़ह। अखन परिवारक सभ कियो छी, तँ एकटा विचार कइये ली।

फुलेसर : (साकांच होइत) हम सभ तँ बच्चा छी, की विचार दऽ सकै छी। मुदा बुझि तँ सकै छी।

कर्मनाथ : बौआ, कोनो परिवारक बच्चा, नऽ एक्के बेरि सियान होइत अछि आ ने एक्के रंग रहैत अछि। किऐक तँ सभ परिवारक वातावरण एक्के रंग नहि होइत अछि। पढ़ल-लिखल परिवारक बच्चा आ बिनु पढ़ल-लिखल

परिवारक बच्चामे बहुत अंतर होइ छै। तहिना अगुआएल परिवारक (सम्पन्न) बच्चा आ पछुआएल परिवारक (गरीब) बच्चामे सेहो बहुत अंतर होइत अछि। ऐहेन- ऐहेन अनेको कारण अछि जहिसँ दू परिवारक बच्चाकेँ दू रंगक वातावरण भेटैत छैक। तेँ दू रंगक होइत अछि।

चमेली : जेकर माए-बाप खूँटा सन-सन ठाढ़ रहत, अनेरे ओहि बच्चाकेँ परिवारक काज किअए पूछबै।

कर्मनाथ : बिनु वुझनहि अहाँ किअए सभ वातमे टाँग अड़ा दइत छियै। (भाव बदलैत) ओना अहूँक दोख बड़ बेसी नहिये अछि किऐक तँ अहुँक विचार एक रस्तेक अछि। जे रास्ता व्यवस्थासँ जुड़ल अछि। अइ दुनियाक अजीव बुनाबटि अछि। कने नीक जेँका बुझियौ। जहिना विषुवत रेखा बीच दुनियामे अछि। रेखासँ उतरो आ दछिनो, समान दूरीपर, एक्के रंग मौसम होइत अछि। मुदा विपरीत समयमे। तहिना विचारो आ जिनगियोक अछि। अखन चम्पाक विआहक संबंधमे विचारैक अछि तँ बेसी नहि कहब। कोनो परिवार, परिवारक सभ सदस्यक होइत, नहि कि परिवारक गारजनेटा कऽ। हँ, ई बात जरुर अछि जे परिवारक सभ काजक भार गारजनेपर रहैत अछि एकर माने ई नई जे बच्चा सभ बुझवे ने करए।

फुलेसर : बहीनिक विआहक चरचा करै छेलियै?

कर्मनाथ : जे बात बौआ तू पुछलह, सैह हमहू कहऽ चाहै छिअह। तीनू भाइ-बहीनिमे चम्पा जेठ छह। बी0 एक रिजल्टो निकलिये गेलइ। अपना मनमे जे छल ओ भइये गेल। उमेरोक हिसासँ अठारहम पुरि उनैसम चढ़ल, तँ आब बिआह कऽ लेब, उचितो हैत। कथा-कुटुमैतीक सवाल अछि, तँ किछु समय लगबे करत।

फुलेसर : किछु दिनक बाद चलितहुँ

कर्मनाथ : देखहक, ओना तँ हमहू नीक-नाहाँति नहिये बुझै छी किअए तँ सभ दिन बाहरे रहलौं। मुदा देखै छियै जे किछु मास छोड़ि लोक बेटा-बेटीक बिआह सभ मास करैत अछि। तखन तँ सभ मासक अप्पन-अप्पन गुण छै। तइमे हमरा बुझैत फागुनक काज बढ़ियाँ होइत अछि।

जाड़क मासमे बेसी जाड़ आ गरमी मासमे हबा-बिहाड़िक संग रौउदो तीख होइ छै। तेँ फागुनक दिन सभसँ नीक।

(चम्पा बिआहक चर्च सुनि सबहक मनमे सभ रंगक विचार उपकै लगल। चमेलीक मनमे बेटी जमाइ आ परिवार नचैए लगल। जबकि चम्पाक मनमे बदलैत जिनगी। जुहीक मनमे बहीनिक विआहक आनन्द तँ फुलेसरक मनमे माए-बापक परेशानी। खुशीसँ जुही गीत गाबए लगली।)

चमेली : बेटी विआहक चर्च, बेटीक सोझामे करैत लाज-धाक नइ होइए।

कर्मनाथ : से की?

चमेली : आइ धरि ऐहेन कतौ देखने-सुनने छेलियै। आ कि मनमे सनकी सवार भऽ गेल अछि। जे मनमे अबैए बकै छी।

कर्मनाथ : (मुस्की दइत) जकरा अहाँ नीक परम्परा बुझै छियै, भऽ सकैत अछि। जखन समाजमे दहेज (खरीद-बिकरीक) चलनि नहि रहल छल हेतइ। पढ़लो-लिखल नहिये जेँका छलै। मुदा आइक बेटी पढ़लक-लिखलक हेँ। ओ अपन जिनगीक बात बुझै लगल हेँ। तेँ माए-बापक ओकाइत आ अपना प्रति माए-बापक सेवा ओकरा सोझामे अछि। तेँ ओ खुद अपन विआहक विचार कऽ सकैत अछि। ऐहेन तँ नहि जे वेटीक चलैत माए-बाप डूबि जाय वा माइये-बाप बेटीकेँ डुबा दइ। जहाँ धरि अनमेल विआहक बात अछि ओ लेन-देनक चलैत रहल अछि। तेँ बेटीकेँ अपनापर भरोस कऽ अगिला जिनगीक लेल डेग बढ़वै पड़तै। जइ समाजमे नारी शिक्षा कऽ अधला मानल गेल ओहि समाजमे लड़का-लड़की समान कोना भऽ सकैत अछि। तखन रहल रंग-रुपक समानता, रंग-रुपक समानता परिवारक रंगरुप समाप्त कऽ दइत अछि। तहूसँ जुआएल गहूमन, बिनु केंचुआ छोड़ने, कातमे बैसल अछि। ओ छी जाइतिक भीतर जाइतिक कुल-मूल।

फुलेसर : बाप रे बाप, जइ समाजमे एते रंगक विषमता अछि ओ समाज एक रास्तासँ चलि कोना सकैत अछि। समाजक बात तँ कात रहअ जे परिवारो कोना चलि सकैत अछि। मर्द औरत माने पति पत्नी परिवारक

मुख्य अंग होइत, जहिना गाड़ीक पहिया। मुदा गाड़ीक एक पहिया मजगूत होय आ दोसर कमजोर तँ समुचित भार लऽ गाड़ी कोना चलि सकत। तहिना तँ परिवारो अछि।

कर्मनाथ : बौआ, समाज आ परिवार एहि रुपे, पुरान कपड़ा जेँका, चिड़ी-चोंत भऽ कऽ फटि गेल अछि जेकरा सीला सँ काज नहि चलि सकैत अछि। जाधरि ओहिमे पीओन-चेफड़ी लगा-लगा काज चलाओल जाइत अछि, जाइत अछि। मुदा एहिसँ काज कते दिन चलत। अखन हम एहिसँ बेसी नहि कहबह। किऐक तँ अखन अपने सिरपर काज अछि, जहि लेल सोचैक अछि।

चमेली : जखन चम्पाक विआह करैक विचार करै छी तँ गहना जेबरक ओरियान कहिया करब?

कर्मनाथ : (चम्पा दिशि देखि) कहलौं तँ ठीके, मुदा जकरा रुपैआ नइ रहतै ओ की करत?

चमेली : छुछ देहे बेटी सासुर जाएत, से अपना नीक लागत?

कर्मनाथ : कहलौं तँ ठीके, मुदा जकरा अहाँ मान-मरजादा वुझै छियै ओ खाली गहने-जेबर छी। गरीब लोक जे गहना-जेबरक सिहिन्ता करैए ओ ओकर मुरुखपना छियै। कने आखि उठा कऽ देखियौ जे कोन परिवारक माए-बाप अपना बेटीकेँ किछु नहि किछु गहना नइ देलक, मुदा ककरा घरमे एकटा कनौसियो छै। तँ गरीब लोक कऽ एकर (गहनाक) सिहनते नइ करैक चाहियै।

फुलेसर : बावूजी, जखन ऐहेन ओझराओठ काज अछि आ अखन धरि किछु केलौं नहि, तखन लगले कोना काज निपटाएब?

कर्मनाथ : हम संकल्प कऽ कऽ गाम जा रहल छी, तँ विआह हेबे करतै। काज कोना हैत से हमरा मनमे अछि। हम्मरबेटी युगक अनुकूल अछि, तँ विआह नइ होइक कोनो कारणे नहि अछि। (चम्पा से) बाउ, तू हमर जेठ बेटी छिअह। पढ़ल-लिखल सेहो छह। तँ तोरा किछु बात कहि दिअए चाहै छिअह। दुनिया दिशि नइ देखह अपना आ अप्पन माए-बापकेँ देखह। हम पढ़ि कऽ प्रशासनिक अफसर बनलौं मुदा तोहर माए

कते पढ़ल छथुन। फेरि परिवार कोना चलैत अछि। तोरा हम बी. ए. पास करा देलियह। तोरामे ओते क्षमता आबि गेल छह जे स्कूल, ऑफिस, बैंक वा आन कोनो काज कऽ सकैत छह, तखन तोहर जिनगी भारी किअए हेतह। मनसँ ई हटा लाय जे हम उपारजन नइ कऽ सकै छी। जहिना पुरुख उपारजन करैत अछि तहिना तोहूँ कऽ सकै छह। हम तोहर बाप छिअह, तोहर अधला हुअ, ई हमरा मनमे कोना आओत?

चमेली : गाममे जे खेत-पथार अछि, जइसँ एक्को सेरक आशा कहियो ने होइए, भाय सभ बेचि-बेचि खाइए, ओ बेचि कऽ बेटीक बिआह कऽ लिअ।

कर्मनाथ : कहलौं तँ ठीके मुदा जाधरि पिताजी जीवैत छथि ताधरि हम्मर बेचब उचित हैत। एक तँ ओहिना पिताजी हमरा विआहेसँ कड़ुआइल छथि, तइपर सँ जँ ऐहन काज करब तँ परिबारमे विस्फोट होइमे बाँकी रहत। हम बेटीक विआह करैले गाम जाएब कि घरमे आगि लगवै लेल।

फुलेसर : (चिन्तित भऽ) बड़ भारी काज उपस्थिति भऽ गेल अछि, बावूजी।

कर्मनाथ : (मुस्कुराइत) बौआ, अखन तू बच्चा छह; तँ नीक जँका परिवार आ समाज कऽ नहि जनैत छहक। जहिना फुलवारीमे सैकड़ो रंगक फूल रहै छै, मुदा कातसँ देखिनिहार तँ कातेक फूल देखैत अछि। बीचमे कोन फूल केहेन छै, से थोड़े देखैत अछि।

फूलेसर : अहाँक बात हम नहि बुझि सकलहुँ, बावूजी।

कर्मनाथ : फुलवारीक तँ उदाहरण देलियह। असल बात समाजक अछि। फुलबारिये जँका समाजोमे अछि। हजारो रंगक मनुष्य समाजमे रहैत अछि। हर मनुष्यकँ अप्पन-अप्पन जिनगी, अप्पन-अप्पन विचार होइत अछि। जहिसँ अप्पन-अप्पन संकल्प आ उदेस (उद्देश्य) सेहो होइत अछि। नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला मनुष्य समाजक पेटमे नुकाएल रहैत अछि। जेकरा मात्र देखिनिहारे देखि पबैत अछि। सभ नहि। मुदा एकटा बात कहि दइ छिअह जे जखन कोनो काज करैले डेग उठाबी तँ देहक सभ अंगकँ चैकन्ना कऽ कऽ राखी। जेकर सभ

अंग क्रियाशील रहत ओ माइटिक रास्ताक कोन बात जे पाइनियो आ हवोक रास्तासँ चलि सकैत अछि। तँ सदिखन आशावान भऽ कऽ डेग बढ़ेवाक चाही।

दोसर अंक

(सोमनाथक दरवज्जा। सोमनाथ मसलनपर ओंगठल,
आशा आ नूनू दुनू भाग बैसल।

सोमनाथ : बाउ नूनू, आइ जे भाँग पिऔने छेलह से कतऽ सँ अनने छेलह? अप्पन घरक पत्ती तँ नहि छेलह। बहुत दिन बाद ऐहेन मस्तगर भाँग पीलहुँ। आब कने चाह पीआवह। तखन, परसु जे कर्मनाथक पत्र आएल छेलह, ओ पढ़ि कऽ सुनविहह।

(नूनू चाह आनए जाइत अछि)

(पत्नीसँ) एकटा बात कहू।

आशा : की?

सोमनाथ : कने विआह दिनक बात मन पाड़ियौ तँ। ओइ दिन ई बात कल्पनो केने रही जे एक दिन हमहू सभ अथबल हैब।

आशा : (खौंझा कऽ) मन बौआइए। जते बूढ़ भेल जाइ छी तते बुद्धियो टूटि-टूटि खसैए। एतबो नै बुझै छियै जे अइ दुनियाक नियमे छै जे जन्म लेब, जुआन हैब आ बूढ़ भऽ कऽ मरि जाएब। अगर जँ से नहि होइत आ पहिलुको लोक सभ जीबिते रहितथि तँ अहाँकेँ कि हमरा के पूछैत?

(चाह लऽ कऽ नूनू अवैत। एकटा कप सोमनाथक हाथमे आ एकटा आशाक हाथमे दइत)

सोमनाथ : (चाहक चिस्की लइत) सात घर मुद्दइयो किअए ने हुअए मुदा भगवान जँ ओकरो बेटा देथुन ते नूनू सनक देथुन। जे बेटा बाप-माएक सेवा नै केलक ओहो कोनो बेटे छी। कखनो काल मनमे अबैए जे दूटा

समाजोक लोककेँ आ अपनो दियाद-बादकेँ बैइसा कहि दिअए जे हमरा मुइलापर नूनूए आगि दिअए।

आशा : ऐना किअए बजै छी। लोक सुनत तँ की कहत। जखन भगवान तीनिटा बेटा देने छथि तँ हमरा लिए सभ बरावरि। जेकरा हाथे आगि लिखल हेतइ, ओ देत। कोनो कि देखैले एबइ। माए-बापक अप्पन करतब छै, बेटा-बेटीक अपन होइ छै। तइले अनेरे माथ किअए धुनै छी।

सोमनाथ : (बिगड़ि कऽ) जे बेटा जीबैतमे कटहर लगा कऽ मोजर नइ दइए ओ मुइलापर सोनाक मंदिर बना देत। अहाँ सैह बुझै छियै।

आशा : (झपटैत) जना अहाँ अपना माए-बावूकेँ सोनाक मंदिर बना देने होइएनि, तहिना बजै छी। जेहने किरिया-करम कऽ कऽ मरब तेहने ने फलो हैत। जँ अशुद्ध (अधलाह) किरिया कऽ कऽ मरब तँ भूत-परेत (प्रेत) बनि गाछी-बिरछीमे बौआएब, नइ जे शुद्ध (नीक) किरिया कऽ कऽ मरब तँ स्वर्गमे जाएब। देखै नै छियै जे पपिआहा सभ जे मरैए तँ ओहिना बौआइत रहैए। पियास लगै छै तँ इनारपर जा-जा लोकक धैला फोड़ैए आ भुख लगै छै तँ बाट-बटोहीकेँ पटकि-पटकि सनेस छीनि-छीनि खाइए। हमरा की अहाँकेँ, विधाता छठियारे दिन जे लिखि देने छथि, से तँ हेबे करत।

सोमनाथ : (पिनकि कऽ) ठीके मौगी बातक कोनो ठीक नै। लगले कहै छी जे जेहेन किरिया करब तेहेन फल हैत आ लगले कहै छी जे छठियारे दिन विधाता लिखि देलनि। अच्छा, एकटा बात कहू ते, जाबे जीबै छी ताबे ने लिखलाहा हैत आ कि मुइलाक बादो।

आशा : अहाँ कऽ की होइए जे मुइलाक वाद फेरिसँ लिखाएत। आ कि छठियारे दिनक लिखल मुइलाक वादो हैत।

(पनबट्टीसँ पान निकालि मुहमे दइत सोमनाथ)

सोमनाथ : (मुहक पान गाल तर दवैत) बेटा नूनू, अगर जँ भगवान गाहीक-गाही बेटा नहियो दथि आ तोरा सन एकोटा रहए तँ ओइ गाहीक-गाहीसँ नीक। अपना सबहक जे बाप-दादा कहने छथिन जे माए-बापक सेवा

करब बेटाक सबसँ पैध धर्म थिक। से कोनो अधलाह कहने छथिन। अखनो जे ई दुनिया चलैत अछि से तोरे सन-सन बेटाक धर्मपर। नइ तँ ई दुनिया कहिया ने अलोपित भऽ गेल रहैत। किऐक तँ तते ने चोर-उचक्का, बइमान-शैतान सभ फड़ि गेल हेन जे एक्को दिन ई धरती असथिर रहैत। अच्छा, एकटा बात कहह जे औझुका भाँग कतएसँ अनने छेलह।

नूनू : औझुका कोन भाँग छेलए से नइ बुझलियै। दछिनवारि टोलमे जे दिनेश अछि ओइह दरभंगासँ अनने अछि।

सोमनाथ : के दिनेश?

नूनू : हीरा कक्काक बेटा। दरभंगा कओलेजमे पढ़ैए।

सोमनाथ : (किछु मन पाड़ैत) हीरालाल। ओकरा तँ कहियो भाँग मुहमे लैत नै देखलियै। तेकर बेटा ऐहेन ओसताज भऽ गेल।

नूनू : ऐँह, जेहने मजगर भाँग पीवैए तेहने टिपगर तमाकुलो खाइए। गाममे ओहन माल के देखत। अपना सभ तँ ओ भाँग पीबै छी जे बाड़ी-झाड़ीमे अनेरुआ जनमैए। ओ शुद्ध कलमी भाँग पीबैए।

सोमनाथ : भाँगो कलमी होइ छै, हौ।

नूनू : अहाँ तँ पुरना गीत गबै छी। विज्ञान कते आगू बढ़ि गेल अछि से नइ बुझै छियै। आ कि सोझे हवाइये जहाज आ रौकेटेटा बुझै छियै। विज्ञान बढ़लासँ खाइओ-पीवैक वस्तु बढ़ल की। अहाँ ने सदिखन कहै छियै जे बासमती धानक चूड़ाक जोड़ा दोसर नइ अछि। मुदा आब जे चूड़ा बजारमे विकाइत अछि ओकर जोड़ा बासमतीक चूड़ा करतै।

सोमनाथ : चूड़ाक गप छोड़ह। देखते छहक जे छह माससँ तेहेन रोग ने तरे-तर देहमे घोसिया गेल अछि जे सभ खेलहा-पीलहा बिसरि गेलहुँ। जे ने करै बीमारी। ने तँ जइ जौ कऽ कहियो अन्नमे नइ गनलौं, से भऽ गेल अछि अहार। थाकल पाँव पलंग भेल भारी, आब की लादब हौ बेपारी। खाइक बात छोड़ह। कलमी भाँग कोना होइ छै, से कनी बुझा दाय।

नूनू : एकटा बड़ भारी कम्पनी अछि। जेकर अरबो-खरबोक कारोवार छै। वैह भाँगोक कारोवार करैत अछि। भाँगेक जूस, मोदक इत्यादि विन्यास बना-बना देश-विदेश सगतरि बेचैए। ओइह कम्मनी भाँगक खेतीक लेल किसानकेँ अगुरबारे खरचो आ संकर किस्मक बीओ दइत अछि। किसानो सभकेँ, आन फसिलसँ बेसी रुपैइयो होइ छै आ मेहनतो कम होइ छै। बाधक-बाध किसान सभ काते-कात मकै रोपने अछि आ बीचमे बीधाक बीधै भाँग लगौने अछि। ओही भाँगमे मसल्ला सभ मिला कऽ जूसो, मोदको आ आनो-आनो विन्यास सभ बनबैत अछि।

सोमनाथ : अच्छा, आब दुनियादारीक बात छोड़ह, पत्र निकालि कऽ सुनावह।

(जेबीसँ चिट्ठी निकालि नूनू मने-मन पढ़ै लगैत)

नूनू : (चिट्ठी पढ़ि) सबतुर भैया नीके छथि। चम्पा बी.ए.पास केलक। ओकरे विआहक लेल लड़का भजिअवैले लिखलनि अछि।

सोमनाथ : (उत्तेजित होइत) तोरा दुनू भाँइकेँ लिखने छौ कि हमरा।

नूनू : अहीं कऽ लिखने छथि।

सोमनाथ : (आरो उत्तेजित होइत) पढ़ल-लिखल लोक कते बेसरमी होइए से देखही। तोरा मन हेतउ कि नहि, जखैन उ (ओ) बी.ए. पास केने रहए, तखैन विआहक चरचा उठौलियै। (अफसोस करैत) ओ-हो-हो, हुसि गेल। गरदनि कटि गेल। सम्पत्ति दोवर भऽ जइतौ। बीस बीघा खेत तँ बेटीक खोंइछमे दइले तैयार रहए। नगद आ जेबरक कोन ठेकान। (आदर्शवादी बनैत) कहू जे कते भारी नोकसान परिवारमे भेल।

आशा : अहाँ तँ तेना बताह जँका बजै छी जना करमू अइ घरक कियो छीहे नहि। ने अहाँ कियो छियै आ ने ओ कियो छी। बाल-बच्चा जे कनी-मनी किछु कइये गेल तँ की हेतइ। तइले अहाँ किअए एते आमील पीने छी।

सोमनाथ : हूँह। एते दिन बेटा सिखौलक आ आब अहाँ सिखाउ। गीदरक नांगरि किमहर होइ छै से अहीं बुझवै। दिन-राति कमाई छी, घर चलबै छी

तँ बुझि पड़ैए जे एहिना दिन-दुनिया चलै छै। (चिन्तित होइत) आब तँ सहजहि अथबले भेलहुँ, अपनो जिनगी पहाड़ बुझि पड़ैए। मान-अपमान, इज्जत-आबरु सभ बिसरि गेलौं। जावे जीबै छी ताबे कौआ जेकाँ टाँहि-टाँहि करै छी। (अफसोस करैत) घरक की मान-परतिष्ठा (प्रतिष्ठा) छल, की रुआब छल, सभटा चलि गेल। भगवानो रच्छ रखलनि जे सभ सुख-भोग छोड़ा देलनि। जौ के फॉॅटीपर आनिकेँ रखि देलनि। नइ तँ हम्मर की दशा होइत से तँ उगलेहे देखितथि। (गंभीर होइत) अच्छा अहीं कहू जे बेटा मनसम्फे कमाइए की नै? मुदा माए-बाप के की दइए।

आशा : (मुह बिजकबैत) अहाँकेँ कोनो गत्तर (गत्र) मे लाजे ने होइए। जखैन करमू नोकरी शुरु केलक आ महीने-महीने पान सौ रुपैया पठबै लगल, ते तीनिये मासक बाद लिखि पठौलियै जे पान सौ रुपैया लऽ कऽ चुट्टीक बिल गहब। आ आब निरलज भट्टा जेँका कहै छियै जे रुपैइये ने दइए। अगर पान सौ रुपैया झुझुआन बुझि पड़ल तँ कहितियै जे बौआ मासे-मास नहि, छह मासपर एक्के ठीन पठबिहह। जहिसँ कोनो काज चलत।

सोमनाथ : बड़ बुद्दियारि छी अहाँ। एकटा बात कहू तँ, जे बेटा-बेटीक विआह-दुरागमन करब माए-बापक मर्यादा छी की नहि? आ कि अपने मने विआह कऽ लिअए।

आशा : अगर जँ करमू (कर्मनाथ) अपने मने विआह कइये लेलक तँ कोन बड़ भारी जुलुम कऽ लेलक। कोनो कि जाइत गमा लेलक। दहेज नै लेलक, सैह ने केलक। तँ की हेतइ। वैह कन्यागत अहाँक तिजोड़ी भरि दइते तँ बड़वढ़िया, नइ भरलक ते बड़ अधला।

सोमनाथ : की हौ बौआ नूनू। माइयक बातकेँ तू नीक बुझै छहक कि अधला।

नूनू : बाबू, माए पुरना विचारक लोक छथि तँ हिनको विचार बेजाय नहिये छनि। मुदा आब तँ युग बदलि चुकल अछि। अर्थयुग आबि गेल। जेकरे पाइ छै ओकरे लोक मनुक्खो बुझै छै आ समाजमे मानो-प्रतिष्ठा दइ छैक। तँ एते घाटा तँ परिवारमे जरुर भेल जे मोट रकम हाथसँ

ससरि गेल। मुदा माए, आब परिकछो (परीक्षो) बेरि आबिये गेल अछि। करमू भैया दहेज नइ लेलनि, बड़बढ़िया। मुदा आब तँ अपनो बेटीक विआह करैक छनि की ने?

सोमनाथ : (फड़कि कऽ) हँ-हँ, बेस कहलहक बौआ। जनिहें मियाँ धुनै बेरिया। भने तँ आविये रहल हैँ। भगवाना नीक केलनि जे अथबल बना देलनि। ने किछु करब आ ने दोखी हैब।

आशा : बौआ नूनू, तू ने कहै छहक जे अर्थयुग आवि गेल, तँ सभ काज पाइयेक हाथे हैत। मुदा एकटा बात वुझै छहक जे मनुक्ख मनुक्खे रहत। युग कोनो अबै आ कि जाइ, मुदा नीक काज करैवला नीके काज करत आ अधला काज करैवला अधले करत। जइ बेटाक दोख तू दुनू बापूत लगवै छहक ओइ बेटाक गुणो बुझै छहक। अप्पन परिवारक कोन बात जे गामेमे अप्पन कर्मनाथक जोड़ा कैकटा अछि। मनुक्ख तँ सौँसे गामे भरल अछि।

सोमनाथ : अहाँ हाकिम बेटा लऽ कऽ नाचू, मुदा हम तँ सोमनाथे छलौं आ रहबो करब। हमरा नूनू सन बेटा रहक चाही। जखैन जे कहै छियै, दासो-दास रहैए।

आशा : अहीं सन हमहुँ नै ने छी जे कर्मनाथ सन बेटापर आँगरी उठाएब। अपनो तँ दूटा बेटी आ (कर्मनाथ छोड़ि) दूटा बेटो अछिये, किअए ने एकोटा हाइयो स्कूल धरि देखलक। बेटेक चलैत पोती बी.ए. पास केलक। तेकरा अहाँ मनुखे ने बुझै छियै। जेकरा अहाँ नै मनुख वुझवै ओ अहाँकँ मनुख बुझत?

सोमनाथ : (शान्त होइत) आब हमरा कोन मनुख बनैक काज अछि। मृत्युक रास्तामे अटकल छी, जखन रसीद कटि जाएत, राम-राम कऽ कऽ विदा भऽ जाएब।

(लालबावूक आगमन)

सोमनाथ : भरि दिन तू कतऽ निपत्ता रहै छह, लालबावू?

लालबाबू : ऐँह, की कहब बाबू! ककर मुह देखिकेँ आइ उठलौं जे समयपर अनजलो ने भेल। सबेरे चौक दिशि गेलहुँ तँ देखलियै जे मारे-लोक घोल-फचक्का कऽ रहल अछि। अनगौँओ आ गौँओ थाहा-थहि कऽ रहल अछि। ससरि कऽ हमहूँ गेलहुँ, तँ देखलियै जे अनगौँआ सभ सन-सन कऽ रहल अछि। गौँआ सबमूड़िआरी दऽ दऽ खाली सुनैत अछि। मन असथिर भेल। एक गोटेकेँ पुछलियै जे भाइ की बात छियै जे अहाँ सभ ऐना सन-सन करै छी? कत्तऽ हँड़ बान्हि कऽ जा रहल छी, ओ कहलक, हमरा गामक (खैरबोनीक) एकटा विद्यार्थी दरभंगामे पढ़ैत अछि। लौजमे रहैए। ओही लौजमे पीपराघाटक सेहो पान-सात गोटे रहैत अछि। एक ठाम रहने सभकेँ-सभसँ चिन्हारए छै। पीपराघाटक विद्यार्थी सभ हमरा गामक विद्यार्थीकेँ फुसला कऽ अपना गाम लऽ गेल, आ एकटा लड़कीक संग बलजोरी विआह करा देलक।

सोमनाथ : लड़काक बापकेँ बिना पुछिनहि?

लालबाबू : हँ, तँ नऽ लड़काक समांग सभ जुटिकेँ पीपराघाट जाइए। लड़काक पितिऔत भाइ कहलक जे दस लाख रुपैआपर लड़काक विआह सतगछिया ठीक भेल छै। जइमे एक लाख रुपैया अगुरवारे देनहुँ अछि। बाकी रुपैया विआहसँ चारि दिन पहिने देवाक बात पक्का भऽ गेल छै।

सोमनाथ : जखन लड़का-लड़कीक विआह भऽ गेलइ, तखन लड़कावला सभ जा कऽ की करतै?

लालबाबू : ऐँह, की करतै? तेहन गरमाएल लोक सभकेँ देखलियै जे बुझि पड़ल जना बेटी वलाक घरक कोरो खींचि लेतइ। आ अहाँ कहै छियै की करतै?

सोमनाथ : कते गोरे खैरबोनीवला सभ छेलइ?

लालबाबू : कोनो की गनलियै, मुदा चालीस-पचासक धत-पत छलै।

नूनू : आइये खैरबोनीवला सबहक दालक छुटतै। तेहेन शैतानक चरखी पीपराधाटबला सभ अछि जे आइये बुझि पड़तै। तहुमे एकटा तेहेन खूँखाड़ नेताक धसना पाटी अछि जे काजे यैह करैए।

सोमनाथ : (दुनू हाथ माथपर लऽ) कोन जुग-जमाना चलि आएल से नहि जाइन।

नूनू : बाबू, भगवानकेँ कहिअनु जे दस बर्ख आरो औरदा दथि। तखन देखबै जे की सभ होइ छै।

सोमनाथ : तकर बाद की भेलइ?

लालबाबू : सभ कियो चाह-पान खा उत्तर मुहे सनकल विदा भेल। जखन ओ सभ कनी चौकसँ आगू बढ़ल कि हमहू ससरि कऽ रतनाक चाहक दोकानपर आवि गेलौं। चाहक देकानपर नीक-नहाँति बैसलो ने रही कि सुरजा आएल। तामसे ओकर मुह तुरुछ जेँका भेल, मुदा किछु बजै नहि। पूछलियै जे सुरुज मन बड़ खिसिआएल छह। ओ कहलक, लालबाबू की कहब! दुनियामे सभ बेइमान भऽ गेल। ककरा के अप्पन बुझत। से की? हमरा सारकेँ बेटीक विआहमे करजा भऽ गेलइ। ने रुपैआ होइ छलै आ ने महाजनकेँ दइ छलै। खिसिया कऽ महाजन लालीस कऽ देलकै। हमर सारो चलाकी केलक। ओ अप्पन सभ जमीन ममिऔत भायक नामसँ फरजी कऽ देलक। ओहो साला तेहेत नेतघटू जे सभ जमीन वेइमानी कऽ दफानि लेलक। सैह, ओतइसँ समाद आएल हैं जे कनी आबि कऽ फड़िया दिअ।

नूनू : के केकरापर बिसवास करत। एक तँ ओ वेचारा अप्पन बुझि जमीन फरजी केलक आ ओ साला केहेन गइखोक भऽ गेल जे सभटा बेइमानी करै छै।

लालबाबू : अखन तँ अनकर बात सुनलियै। आब अपन बात सुनू ; चाह पीबिकेँ जहाँ घर दिशि विदा भेलौं कि आगूऐसँ गंगाइ घेरि कऽ कहैए लगल।

सोमनाथ : (उत्सुक भऽ) की, की गंगाइ कहै लगलह?

लालबाबू : कहै लगल जे अहाँक मोहन (लालभाइ) हमर गरदनि काटि लेलनि। गरदनि कटैक नाम सुनि हम चैंकलहुँ। मनमे रंग-विरंगक बात अबै लगल। पूछलियै जे कने सरिया कऽ कहह। ओ कनैत कहै लगल जे पनरह कट्ठा खेत हुनकासँ नेने छलहुँ। दस हजार रुपैइये कट्ठा देने रहथि। जेकरा तीनि-चारि मास भेल हएत। खेत जोइत कऽ मकै केने छी। परसु खन मुनेसरा आबि कऽ कहलक जे गंगा भाइ मकई हमरा

बाँटि दिहह। हम चैंकि गेलहुँ कहलियै जे जखन हम खेत कीनने छी तँ तोरा किअए बाँटि दिअ। एते सुनिते ओ जेबीसँ दस्तावेज निकालि कऽ देखा देलक। ओकर रजिष्ट्री हमरासँ दू मास पहिलुके छै।

सोमनाथ : (अकचकाइत) मोहनक तँ चाइल-प्रकृति ऐहेन नै छै।

नूनू : लोकक किरदानी मुह-कान देखने वुझबै। बेटीक विआह जे ओते लाम-झामसँ केने छलाह से कतएसँ। एक लाख रुपियामे पटना से खाली टेन्टे अनने छलाह। कहाँदन पच्चीस हजार भनसिया नेने छलै, तइपर सँ चारि सय बरिआतीक खेनइ-पीनाइ। तहूमे जते बरिआती खेलक, तइसँ बेसी समान उगरिये गेलनि।

लालबाबू : सात लाख रुपियो गनने छलाह।

सोमनाथ : जे सात लाख रुपिया गनत, ओ ओहने लड़का आनत?

नूनू : लड़का अनलनि कि धन। डेढ़ सय बीघा जमीन लड़काक माथपर पड़ै छै।

सोमनाथ : अच्छा, छोड़ह दुनियादारीक गप। लालबावूकँ कर्मनाथक पत्र देखए देलहक।

नूनू : कहाँ। नहि!

(नूनू लालबावूक हाथमे चिट्ठी दैत। लालबावू चिट्ठी पढ़ै लगैत)

लालबावू : दिन पनरहम छियै। हम चौकेपर गुलटेनक पानक दोकानपर रही। वैह (गुलटेन) कहैत रहए जे मालिक आइसँ पानक खिल्लीमे एक रुपैआ बढ़ा देलियै। किऐक तँ पानक सभ मसल्ला महग भऽ गेल। तहि बीच एक गोटे साइकिलसँ आएल। साइकिल दोकानेक आगूमे ठाढ़ कऽ गुलटेनकँ पुछलकै, पोलीथीन अछि। गुलटेन मुसकिया देलकै। ओ कम्पनीक नाम पुछलकै। पानोबला मूड़ी डोला देलकै। किलो भरिक एकटा पोलीथिन बढ़ा देलकै। ओहो बटोही एकटा पचसटकही निकालि दोकानवलाकँ दऽ देलकै। ठाढ़े-ठाढ़ ओ बटोही गट दे पोलीथिन पीबि गेल। पीलाक बाद ओ बटोही दोकानदारकँ पुछलकै, कर्मनाथ बावूक घर ऐठामसँ किमहर छनि। हमरो कान ठाढ़ भेल।

सोमनाथ : ओकरा किछु पुछबो केलहक?

लालबाबू : नहि। अपने मने बजै लगल जे कर्मनाथ बावू आ हम्मर भाइ सहाएव (जेठ भाइ) एक्के ठीन रहै छथि। कमा कऽ हम्मर भाइ सहाएव अमार लगा देलखिन। हमरा गाममे एक्को गोटे नहि अछि जे बेटीक विआहमे एते खर्च केने हैत।

नूनू : अप्पन कर्मनाथ भइया कि रुपैइया नइ रखने छथि। तखन तँ हम सभ दियाद छिअनि तेँ छिपौने छथि। पाइ रखैक लूरि सभकेँ होइ छै। कियो ढ़ोल जेँका ढ़नढ़नाइत रहत आ कियो चुपचाप दबने रहत।

सोमनाथ : पत्रक बात तँ सभ बुझवे केलहक। आब चारु गोटे (बाप-माए, दुनू भाइ) विचारि लाए जे की करवह?

नूनू : जखन अहाँ दुनू गोरे (बाप-माए) छीहे तखन हम सभ की कहब।

सोमनाथ : हमरा तँ साप-छुछुनरिक पड़ि भऽ गेल अछि। ने, हँ कहैत बनैए आ ने नै कहैत। हँ, कहैत अइ दुआरे नइ बनैत अछि, जे सत पूछह तँ हमर मन कर्मनाथपर सँ ओही दिन हटि गेल जइ दिन ओ अपना मने बिआह कऽ लेलक। देखल लक्ष्मी घुरि गेलीह। खैर, विआहो केलक तँ केलक जे कमाइयो कऽ तँ एक्को पाइ कहियो नहिये देलक। मुदा छी ते बेटे। तहूमे बेटीक विआह करत। बेटी तँ सिर्फ माइये-बापक नहि होइत, ओ तँ सबहक होइत।

आशा : अहाँक अपने मन कखनो थीर नै रहैए। कखनो किछु बजै छी तँ कखनो किछु। अहीं कहू जे जखैन करमू पान सौ रुपैया मनिआडर करैत रहै तखैन चिट्ठीमे लिखि कऽ पठौलियै जे पान सौ रुपैयासँ चुट्टीक बोहरि मूनब, आ आइ कहै छियै जे एक्को पाइ नै कहियो देलक। वेचारा नोकरी करैए, जैह दरमाहा रहतै तहीमे ने काज चलौत। अनका देखि कऽ करमूओकेँ वहिना बुझवै से ओहिना ओहो घूस-पेंच लइत हुअए तखन ने। दुनियामे सबहक चाइल एक्के रंग होइ छै ?

सोमनाथ : औझुका लोकक भाँज अहीं पेबइ? ककरा रुपैआ बकछुहुल (अधला) लगै छै। एक बर लोककेँ दरमाहा रहै छै आ सात बर बाइली होइ छै।

लालबाबू : माए गे, भइयेक एकटा संगी कमा कऽ अम्बार लगा देलक हेँ। एक्के काज दुनू गोटेकेँ छनि।

आशा : बौआ, एकटा बात तूही सभ कहह जे जइ सम्पतिक सुख तू सभ करै छहक ओइमे ओकर हिस्सा नै छै? ओकर हिस्सा तँ अपने सभ खाइ छियै। ओ कहियो किछो पूछबो केलकह हेँ। एतबो आखिमे पाइन नै छह। अगर जँ ओकरा बेटीक बिआहमे खरच नै जुमतै तँ की ओ अइ सम्पत्तिमे से नइ लेत।

लालबाबू : हमरो रहत तब ने देवइ। तू नै देखै छीही जे साले-साल खेत बेचै छी तखन कहुना कऽ काज चलैए। ने एकोटा पुरना गाछ गाछीमे रहल आ ने बाधमे खेत। लऽ दऽ कऽ घरारी आ घरक आगूमे जे अछि ततबे रहल हेँ, सेहो अपना बुते खेती कएल होइते ने अछि। बटेदारो सभ तेहेन अछि जे दूध महक डारही बाँटिकेँ दइए। मुदा ओहू वेचारा सभकेँ की कहबै, कोनो साल रौदी होइ छै तँ कोनो साल दाही। लगतौ बूड़ि जाइ छै।

आशा : से तँ हमहूँ देखै छियै, मुदा रौदी-दाही दुआरे ककरो उचित कल्याण रुइक जेतइ। बेटा-बेटीक विआह सभकेँ हेबे करतै। घर-दुआर बनबै पड़तै। धिया-पूताक पढ़ौनी, बर- बेमारीमे खरच हेवे करतै। तहूमे हम दस कुटूम-परिवार वला छी। एकरा सभकेँ छोरबहक से बनतह। परिवार किअए कहौलकै।

सोमनाथ : एते राँउ-झाँउ करैक कोन काज छह बौआ। अन्हार घर सापे-साप। जखन कर्मनाथ आओत, विआहक चरचा करत, तखन ने पुछबै जे बौआ कोना काज करबह? ऐठाम ते देखते छहक जे जेकरो ने किछु रहै छै, बोइन-बुत्ता करैए, ओहो एक-आध (एकाध) लाख रुपैआ बेटीक विआहमे खरच करैए। जबकि अप्पन परिवार तँ से नहि छह। कतबो काटि-छाँटि कऽ विआह करवह, तइओ दस लाख खरच हेबे करतह।

तहूमे अपना सबहक समाज तेहेन गड़िबहू अछि जे एतवो नै बुझैए जे जे माए-बाप बेटीकेँ पढ़बैमे ओते खर्च करैए ओकरासँ रुपैआ कोना मंगबै। से लाज थोड़े ककरो होइ छै। नमहर-नमहर भाषण कऽ लेत, मुदा करै काल छुतहरोसँ छुतहर भऽ जाइए। ऐहेन छुतहर समाजमे लोक कोना जीबत।

भीतरसँ : दादी, दादी, कर्मनाथ कक्का ऐलखिन।

(आशा उठि कऽ भीतर जाइत। कर्मनाथक परिवार अवैक गल्ल-गुल)

नूनू : बावू, हम दुनू भाइ तँ छोट छी, तहूमे अहाँ जीबिते छी। तखन तँ जे भैया कहता से कऽ देबनि।

सोमनाथ : (मूडी डोलबैत) एकटा बात हमरा मनमे उपकैए।

नूनू : से की?

सोमनाथ : कहीं ऐहन ने हुअए जे कर्मनाथ अप्पन रुपैआ दाबि लिअए आ खेत बेचैले कहथुन। जँ से हेतह तँ हाथो तरक जेतह आ पाएरो तरक।

लालबावू : तखन की करबै?

सोमनाथ : की करवहक से हमहीं कहबह। आब तोहूँ दुनू भाँइ धीगर-पुतगर भेलह, आबो जे नइ सोचवहक ते कहिया सोचवहक। हम तँ सहजहि अथवल भेलियह, चलन-पियारा छियह। हम्मर आशा कते दिन करबह। जाधरि दाना-पानी लिखल अछि ताधरि मुह देखै छह। जहिया उठि जाएत तहिया चलि जाएब।

(कर्मनाथक प्रवेश। पिता कऽ प्रणाम करैत। लालबावू आ नूनू कर्मनाथकेँ प्रणाम करैत)

सोमनाथ : (असिरवाद दैत) कल्याण हुअ। वौआ, आब तँ हम्मर हालत एत्ते रद्दी भऽ गेल जे मुइले बुझह। छह माससँ डॉक्टर सभ कुछ बड़ा देलक। जौ केर फाँटी खाइ छी, तँ अखनो ठाढ़ छी। नै तँ कहिया ने चलि गेल रहितौं। सौँसे देह जाँचिकेँ डॉक्टर कहलक जे रोग जड़िसँ नै मेटाएत, तखन तँ पथ-पाइन करैत रहूँ। मन भेल जे सवा लाख

महादेबक पूजा करा कऽ सेहो देखियै। मुदा आइ-काल्हि करै छी, ओहो अखैन धरि नहिये केलौं हैं। सभ परिवार आनन्दसँ छह की ने?

कर्मनाथ : हँ । सभ आनन्द सऽ छी। दू मास पहिने हमरो परमोशन भेल। चम्पो बी.ए. कऽ लेलक। बड़वढ़िया नम्बर एलै। फुलेसर बी.ए. मे, आ जुही मैट्रिकमे पढ़ैए।

सोमनाथ : (हँसैत) परमोशन भेलह तँ दरमहो बढ़ल हेतह की ने?

कर्मनाथ : हँ। अढ़ाई सय टाका महीना बढ़ल। मुदा तइसँ की जिनगीमे कोनो बदलाव आओत।

सोमनाथ : (अकचकाइत) से की?

कर्मनाथ : दरमाहा जे बनल छै ओ परिवार आ पदकँ स्तरक हिसाबसँ बनल छै। तहूमे इनकम-टेक्स ओकरा (दरमाहा) नियंत्रित केने रहै छै। जहिना दरमाहा बढ़ै छै। तहिना इनकम-टैक्स सेहो बढ़ि जाइ छै। ततबे नहि, मकान भाड़ा, पानि बिजलीक खर्च सभ बढ़ि जाइ छै। घुमा-फिरा कऽ कहुना परिवार चलवैत जीवि लइ छी। तीनि-तीनिटा विद्यार्थीक खर्च, शुरुहेसँ रहल, अपनो पढ़ै-लिखैक अभ्यास बनि गेल अछि, तोहूमे खर्च होइते अछि। तइपर सँ जइ समाजमे रहै छी ओहूमे खर्च होइते अछि। ई सभ खर्च तँ दरमहेमे से होइए। महीना लगैत-लगैत हाथ साफ भऽ जाइए। साल कहियौ कि मास, एक्को दिन ओहन नइ बँचैए जइ दिन ककरो नै ककरो, किछु ने किछु बाकी नइ रहैत अछि। तखन ते कहुना जीबि लइ छी।

सोमनाथ : तोरोसँ छोट-छोट नोकरी करैवला सबकँ देखै छियै जे कमा कऽ बुर्ज कऽ लइत अछि। से कोना कऽ लइत अछि?

कर्मनाथ : (मुस्की दैत) जहिना शरीरमे रोग होइत अछि तहिना मनोमे रोग होइत अछि। जे बात अहाँ कहलौं ओ मनक रोग छी। मुदा सबहक शरीर वा मन रोगाएले होइत अछि, एहनो बात तँ नहि अछि।

लालबाबू : भैया, पछवारि गामक एक गोटे छथि, भरिसक अहाँ चिन्हतो हेबनि, जे कमा कऽ अमार लगा लेलनि अछि।

कर्मनाथ : हुनका हमहुँ चिन्हैत छिअनि। हमरासँ एक बैच पाछु छथि। पहिने बेसीकाल डेरापर अबैत छलाह आ हमहूँ हुनका ऐठाम जाइ छलौ, मुदा धीरे-धीरे संबंध कमैत गेल। आब ने हम हुनका ऐठाम जाइ छी आ ने ओ हमरा ऐठाम अबैत छथि। रस्ते-पेरे जँ कतौ भेटि भऽ गेलाह ते भेटि गेलाह।

लालबाबू : भैया, अहाँ जे चम्पा विआहक संबंधमे चिट्ठी लिखने छलौं से तँ आब अपनहुँ आबिये गेलहुँ। जहिना चम्पा अहाँक बेटी छी तहिना तँ हमरो भतीजिये छी। जना जे करब तइमे हम सभ कोनो अड़ंगा करब।

कर्मनाथ : अखन ते हमहूँ विआहेक उदेससँ एलहुँ, तँ दोसर तेसर गप करब नीक नइ हैत। मुदा एकटा बात जरुर कहबह जे समय बहुत तेजीसँ बदलि रहल अछि, तँ समयक संग अपनोकेँ बदलै पड़तह। जँ से नइ बदलवह तँ पाओल जेबह। बाबू बूढ़ भेलखुन, कते दिन छथुन तेकर कोनो ठीक नहि। मुदा तू दुनू भाइ तँ जवान छह। परिवार बढ़बे करतह, घटतह तँ नहि। तँ खरचो बढ़बे करतह। ई तँ तोरा अपने पुरबै पड़तह। अखन छोट परिवार छह तखन तँ खेत बिकाइत छह, आ जखन खरचा बढ़तह तखन कोना पुरेबहक।

लालबाबू : हँ, ई तँ ठीके कहलहुँ। मुदा नोकरियो तँ अपना हाथमे नहि अछि। तखन की करबै?

कर्मनाथ : नोकरिये कऽ सीमा-नांगरि छै जे जे करत ओकर गुजर चलतै आ जे नै करत ओकर गुजर नै चलतै। बहुत रास काज सभ अछि, जेकरा केलासँ धनक उपारजन होइत अछि। जे करैवला अछि ओ तँ नोकरियो छोड़ि अपन काज ठाढ़ कऽ करैत अछि।

लालबावू : (मूड़ी डोलवैत) ठीके कहै छी भैया, पाछु घुरि कऽ तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे अखन धरिक समय फुर्र-फाँइमे बीति गेल। आब बुझि पड़ैए जे जीवैक लेल सभकेँ मेहनत करै पड़तैक।

कर्मनाथ : निचेनमे कोनो दिन नीक जेंका बुझा देबह। अखन हमहूँ काजेमे पड़ल छी तँ पहिने एहि काजकेँ निपटबैक अछि।

नूनू : भैया, बेटीक विआह परिवारक सभसँ भारी काज भऽ गेल अछि। तोहूमे जेकरा पाइ-कौड़ीक अभाव छै ओकर तँ इज्जत-आवरु बँचब कठिन भऽ गेल अछि। सभसँ लाजिमी बात समाजमे ई अछि जे बेटी केहनो पढ़ल-लिखल हुअए, शील, गुण, सौन्दर्यसँ पूर्ण किऐक ने हुअए, मुदा ओकर कोनो मोल नहि अछि।

कर्मनाथ : (दृढ़तासँ) बौआ, चम्पाक विवाह हेबे करतै। ई हमरा अपन ब्रह्म कहि रहल अछि। जहाँ धरि दहेजक सवाल अछि, ओ हम एक्को पाइ नइ देवइ। हँ, जे बेबहारिक चलनि अछि ओ तँ पुरबै पड़त।

नूनू : दहेज नइ देबइ तँ काज (विवाह) हैब कठिन अछि।

कर्मनाथ : जइ समाजमे तू दहेजक चलनि देखै छहक, ओ चुतिया समाज अछि। ओहि समाजपर हम थूक फेकइ छी। मुदा वैहटा समाज नहि अछि। ओहिसँ (समाज) हटि दोसरो समाज अछि, जे मनुक्खक समाज छी। जइ समाजमे कियो ककरो अधलाह नहि करैत अछि, आ ने ककरो अधलाह मनमे अनैत अछि। चम्पाक विआह ओहि समाजमे हेतइ। तँ, हमरा दहेजक चिन्ता नइ अछि। तखन तँ सभ दिन समाजसँ हटि कऽ रहलहुँ , जहिसँ अनभुआर थोड़े जरुर छी।

तेसर अंक

(विकासक दरवज्जा। प्लास्टिकक डोरीसँ कुरसी बुनैत)

श्रीचन : (भीतरसँ) विकास भाय। यौ, विकास भाय।

(कुरसी बीनब छोड़ि। चकोना होइत, चारु भाग विकास तकए लगैत)

विकास : के छियह हौ। (फेरि चारु भर तकै लगैत)

श्रीचन : (प्रवेश करैत। कान्हपर कोदरि, हाथमे खुरपी) बिकास भाय। यौ विकास भाय।

विकास : श्रीचन। किअए ऐना अपसियाँत होइ छह, की भेलह हैं?

श्रीचन : नाश भऽ गेल। गरदनि कटि गेल।

विकास : (अकचकाइत) की नाश भेलह? मन असथिर कऽ कऽ बाजह।

श्रीचन : अइसँ एकटा बेटा मरि जाइत, से नीक। मुदा भरल-पुरल चास नाश भेने तँ दू मासक मेहनत बुइर गेल।

विकास : ऐना किअए मुहसँ अधला बात निकालै छह।

(कोदरि, खुरपी रखि। दुनू हाथ माथपर लइत, कनैक मुद्रामे श्रीचन)

श्रीचन : भाय की कहब। भगवानो बड़ धड़कट-बेईमान छथि। किअए लोक अपना कऽ हुनकर सनतान वुझैत अछि। जखैन ओ भगवान छथि तँ सभपर एक रंग नजरि राखथि। से कहाँ रखै छथि। हुनकोमे दूजा-भाव छनि। ककरोपर खुशी भऽ कऽ खूब दइ छथिन आ ककरो भोतहा कचिया (हाँसू) सँ गरदनि हलालि दइ छथिन।

विकास : तेना ने तू बजै छह जे हम किछु बुझवे ने करै छिअह। कने खोलि कऽ साफ-साफ बाजह।

श्रीचन : की खोइल कऽ कहब भाय! अहाँ तँ सभटा बुझबे करै छियै, तइयो अनठा कऽ पूछै छी।

विकास : अनठा कऽ कहाँ पुछै छिअह। तेना ने तू कहै छह जे हम अखनो धरि बौआइते छी। उनटे तोँहि कहै छह जे सभटा अहाँ बुझिते छियै। कनी फरिछाकँ कहह ने।

श्रीचन : अहाँ तँ जनिते छी जे हम ने गिरहत छी आ ने बोनिहर। चैदह-पनरह कट्ठा खेत अछि, तेहीमे खेतियो करै छी आ अपना काज नै रहैए तँ बोइनो करै जाइ छी। पान-सात कट्ठा तरकारीक खेती करै छी जइसँ अपनो खाइ छी आ दू-चारि पाइकँ बेचिओ लइ छी। चारि कट्ठा टमाटरक खेती केने छलौं, से सभटा गलि गेल। जना कियो चोरा कऽ नोन छीटि देने हुअए, तहिना।

विकास : टमाटर गलि गेलह तँ हमरा की कहै छह?

श्रीचन : चलु , कनी मधमन्त्री चलु।

विकास : किअए?

श्रीचन : ओइ बीआबला कम्पनीपर लालीस करबै। अपने तँ कोट-कचहरीक पेंच-पाँच बुझै ने छियै, तँ अहाँकँ संगे लऽ जाएब। ओइ बीआबलाकँ सिखा देवइ जे मरदक पल्ला केहेन होइ छै। जाबे ओकरा जहलमे नइ ढुकाएव ताबे हम्मर मन असथिर नै हैत। जँ चारि कट्ठा टमाटर गेल तँ दू हजार रुपैआ आरो जा।

विकास : कनी सरियाकँ सभ बात कहह।

श्रीचन : दू मास पहिलुका गप्प छी। जतराक (यात्राक) परात झंझारपुर हाट बीआ कीनैले गेलौं। ओना अप्पन चिन्हरबो दोकान अछि। मुदा कोन दुरमतिया कपारपर चढ़ि गेल जे ओइ दोकान नइ जा हाटे दिशि बढ़ि गेलौं।

विकास : अप्पन चिन्हरबा दोकान किअए ने गेलह?

श्रीचन : की कहब भाइ, हाटसँ कनी पछुऐ रही कि बड़का भोमहा (हौरन) सँ बीआ-बाइलिक परचार होइत सुनलियै। खूब जोर-जोरसँ अमेरिकन कम्पनीक परचार करैत रहए। हमरो जना डोरी लगि गेल। जहिना अजगर सापक आखिपर आखि पड़लासँ होइत, तहिना भोमहाक अवाज हमरा मनकेँ पकड़ि लेलक। आन कोनो चीज देखबे ने करियै। जाइत-जाइत हमहूँ ओतए पहुँच गेलहुँ। एकटा खूब नमहर मोटर गाड़ीक उपरमे दूटा भोमहा, दुनू भाग घुमा कऽ लगौने रहए। गाड़ीक बगलमे बीआ-बाइलिक खूब नमहर दोकान सेहो लगौने रहए। ओहि दोकानक चारु भर लोक सभ वैसि कऽ बीआक पौकेट सभ देखैत रहए। दू गोटे दुनू भाग बैसि कऽ बीआ बेचैत रहए। पाँच गरामसँ लऽ कऽ किलो भरि-भरिक पौकेट सभ रहए। पौकेट सभपर, जइ चीजक बीआ रहै, खूब रंगर फोटो सभ बनल रहए।

विकास : अमेरिकन कम्पनी रहै, से तू कन्ना बुझलहक?

श्रीचन : भोमहोसँ परचार करैत रहै आ दोकानदारो कहैत रहए।

विकास : देखैमे दोकानदार केहेन रहए?

श्रीचन : ऐँह, की कहब भाइ; तीनू गोटे एक्के रंग देखैमे लगे। घोरहा रंग, पितरिया आखि आ मकैइया केश तीनूक रहए।

विकास : (छुब्द होइत) घोरहा रंग, पितरिया आखि आ मकैया केश......।

श्रीचन : अहाँ नै वुझलियै भाइ। तीनू एक्के रंग घोर जेँका (छालही मोहि कऽ घोर बनैत) उज्जर दप-दप। तेँ कहलौं घोरहा रंग। अपना सबहक आखि, केहेन सुन्दर कारी अछि आ ओहि तीनूक आखि पित्तरि जेँका देखैमे लगइ। तेँ कहलौं पितरिया आखि। आ जहिना मकै बाइलिक उपरमे जे रुँइयाँ जेँका रहै छै तहिना तीनूक केश देखैमे लगए। अपना सबहक केश केहेन सुन्दर कारी अछि से ओकरा सबहक नइ रहए।

विकास : (हँसैत) तीनू मौगी रहै कि पुरुख?

श्रीचन : यौ भाइ, ई हम ठीक-ठीक नइ कहब। किऐक तँ तीनूक मुहो-कान आ उमेरो एक्के रंग बुझि पड़इ। मोछ-दारही रहितइ तखैन ने बुझितियै। से

तीनूमे ककरो ने रहए। रहबे ने करै आ कि कटौने रहै, से नहि कहि।

विकास : मोछ-दारही ने रहै, मुदा माथोक केशसँ नइ वुझलहक?

श्रीचन : की कहब भाइ, अपना सबहक केश केहेन मरदनमा अछि। स्त्रीगणक केश नमहर होइ छै, से ओकरा सबहक नइ रहए।

विकास : तब केहेन रहए?

श्रीचन : ने मौगियाही केश रहै आ ने मरदनमा। ने बाबरी सीटे जोगर रहै आ ने जुट्टी गुहै जोकर। खोपाक तँ कोनो बाते नहि। ओहिना सोझे पाछु मुहे उनटौने रहए। जे लटकिकेँ गरदनिये धरि रहए।

विकास : सिनुरो लगौने रहै कि नहि?

श्रीचन : ओह। एक्को गोटे सिनुर नइ लगौने रहए।

विकास : आखि केहेन रहए?

श्रीचन : कहलौं तँ पित्तरि जेँका बुझि पड़ै। मुदा एक गोरेक आखि बिलाइ जेँका चकोना होइत रहए।

विकास : (मुस्की दइत) आँइ हौ श्रीचन, तोँहू जीवनी (पारखी) भऽ कऽ अनाड़ी भऽ गेलह, जे मौगी रहै कि पुरुख से नइ वुझि सकलह।

श्रीचन : यौ भाइ की कहब। एक्के रंगक पेन्टो आ अंगो पहिरने रहए। खाली बोलीक अवाजमे कनी फड़क बुझि पड़ए। दू गोरेक अबाज कनी मोट (भारी) बुझि पड़े आ एक गोरेक मेही।

विकास : जेकर अबाज मेही रहए ओ केहेन रहए?

श्रीचन : अरे बाप रे, बिलाइक आखि जेँका ओकर आखि चमकबो करै आ नचबो करए। मुदा तते हाँइ-हाँइ बजइ जे बुझैक कोन बात, सरिया कऽ सुनबो ने करियै। हम तँ खाली ओकरे मुहे दिशि देखियै।

विकास : (हँसि) उ तोरा दिस देखह कि अनका दिस।

श्रीचन : अइ भागसँ ओइ भाग जे आखि नचबै, तखैन हमरो देखए मुदा बेसी ओ पाइयेवला सभ दिशि देखए। हम तँ तीनिये साए रुपैआ लऽ कऽ गेल रही। सेहो ढट्ठामे रखने रही। सोचने रही जे एक साएमे बीआ कीनि लेब आ दू साएकेँ घरक चीज-बौस कीनि लेब। किअए तँ लोक थोड़े सभ दिन हाट-बजार जाइए।

विकास : बीआ जे कीनलहक तेकर रसीदो देलकह।

श्रीचन : हँ। (जेबीसँ रसीद आ बीआक खाली डिब्बा निकालि विकास दिशि बढ़बैत) हे, यैह दुनू छी।

विकास : (रसीदो आ पौकेटोमे लिखल मिलबैत) ऍँह, ओ तँ सोलहन्नी ठकि लेलकह। रसीदमे किछु लिखल छह आ पैकेटमे किछु। तहूमे तू कहै छह जे अमेरिकन कम्पनीक परचार करैत छलैक। तीनू तीन रंगक भऽ जाइ छह।

श्रीचन : (निराश होइत) तब तँ लालीस नइ हेतइ?

विकास : नै। अगर अइ सबूतपर केस करबहक तँ अपने फँसि जेबह। उनटे जहल जाए पड़तह।

श्रीचन : हमरे तीन साए रुपैइयौ ठकि लेलक आ हमहीं जहलो जाएब।

विकास : कानूनक अपन रास्ता छै। जना कहै छह तना जे तीनूक मिलान रहितह ते केशो होइतह। से तँ नहि छह।

श्रीचन : तब की करब?

विकास : नीक हेतह जे भरमे-सरम चुपे रहि जाह। नहि तँ अनेरे खरचो हेतह, खेतियो बुड़लह आ जहलो जेबह।

श्रीचन : (गुम्म भऽ मूड़ी डोलवैत) भाइ अहाँक बात तँ हम सभ दिन मानैत एलहुँ। तँ मानि लइ छी। मुदा हमर मन जरल अछि, जाबे ओकरा या तऽ दसटा गारि नहि पढ़बै, वा दस थापर नै मारबै वा जहल नै ढुकेबै, ताबे हमर मन शान्त नै हैत।

विकास : अपना गलतीसँ सभ कुछ भेलह। कान पकड़ि लाए जे ककरो लल्लो-चप्पोमे नइ पड़ब। एकपर एक ठक दुनियामे अछि। अच्छा, एकटा बात कहह ते ऐना अल्लग-बल्लगमे ठका कोना गेलह?

श्रीचन : (कनै-कनै सन) भाइ, वेगरताक मारल मन बौआ गेल। ओना तँ दूटा बेटी अछि, मुदा जेठकी बेटीक विआह तेसरे सालसँ करैक विचार अछि। तेसराँ बाढ़िमे सभ दहा गेल, तँ नइ कए भेल। पौरुका रौदिये भऽ गेल, तँ ने भेल। अइ बेर सोचने छेलौं जे जना-तना वेटीक विआह कइये लेब, मुदा सेहो आशा टुटि गेल। देखते छियै जे हमरा सभकेँ बैंकसँ करजो ने भेटइए। गामक महाजनो सभ हाथ-पाएर समेटि लेलक। तँ सोचने छलौं जे जना-तना खेतेमे खूब मेहनत कऽ बेटीक विआह कऽ लेब। सेहो ने भेल। आब किछु फुड़वे ने करैए जे की करब।

विकास : श्रीचन, आशा नइ तोड़ह। जखने गरीब भेलह तखने चारु दिससँ बेगरता खिहारबे करतह। मुदा की करबहक। नइ अइ साल बेटीक विआह हेतइ तँ अगिला साल करिहह।

श्रीचन : भाय, हैत तँ सैह। मुदा गामक स्त्रीगण सभ कुट्टी-चौल करैए।

विकास : ओहिना स्त्रीगण सभ बजैए। ककरो बजैमे किछु लगै छै। साहस करह।

श्रीचन : भाय, अपन मन तँ, समय-साल देखि कऽ, मानि जाइत अछि, मुदा घरवाली सदिखन कनिते रहैए। ओकरा जे कनैत देखै छियै तँ अपनो छाती दहलि जाइए।

विकास : से तँ होइते हेतह। एक बेरि तमाकू खाह।

श्रीचन : (जेबीसँ तमाकुल-चून निकालि, तमाकुल चुनबए लगैत) एकटा बात तँ पुछबे ने केलहुँ। आब मन पड़ल। ओ सभ (अमेरिकन) जे ओहन उज्जर दप-दप लगै छले से ओकरा सबहक रंगे ओहिना होइ छै कि चरक फुटल छलै। किऐक तँ अपनो गाममे एक गोरे ओहने अछि। जेकरा सभ चरकाहा कहै छै।

विकास : जइ मुलुकमे ओ सभ रहैए, ओइठाम बारहो मास ठंढ़े रहै छै। अपना सभ जेँका गरमी नै होइ छै, तेँ ओकरा सबहक रंगे ओहन भऽ जाइ छै।

(तमाकुल खा कऽ श्रीचन विदा हुअए लगैत)

विकास : एकटा बात सुनि लाए श्रीचन। जाबे तक अपना ऐठामक किसान नीक बीआ, नीक खाद, नीक दवाई (कीटनाशक) बनवैक लूरि अपने नइ सीखि लेत, ताबे तक एहिना ठक सभ आबि-आबि ठकैत रहतै। बजैत दुख होइए जे अपन देश किसानक देश छी। मुदा किसानक जिनगी मुरदोसँ बत्तर अछि। ने खेती करैक लूरि किसानकेँ छै आ ने खेतीक उपकरण। ने पटवैक कोनो जोगार छै। धार-धुरक अप्पन इलाका रहने खेत चौरसो ने अछि। ऐहन स्थितिमे लोक कोना जीवित रहत?

(श्रीचन जाइत अछि। कर्मनाथक प्रवेश। विकासकेँ प्रणाम करैत)

विकास : आ-हा-हा, बाउ कर्मनाथ। बहुत दिनक बाद तोरासँ भेटि भेल। कहिया गाम ऐलह। सपरिवार आनन्दसँ रहै छह की ने। बच्चा सबहक कुशल कहह?

कर्मनाथ : सभ आनन्दसँ छी। जेठकी बच्चिया बी.ए. पास केलक। बच्चा कओलेजमे आ छोटकी बच्चिया हाइ स्कूलमे पढ़ैत अछि। परसु गाम एलहुँ।

विकास : बेटी तँ विआहै जोकर भऽ गेल हेतह?

कर्मनाथ : हँ। ओइह सोचि दू मासक छुट्टी लऽ कऽ एलहुँ। मुदा ऐठाम जे हवा-बिहाड़ि देखै छी तइसँ मने घबड़ाइत अछि। आन नोकरिया जेँका तँ हम्मर जिनगी नहि अछि।

विकास : बाउ कर्मनाथ, अखन धरि तोरा बच्चे जेँका वुझैत एलियह आ आगुओ बुझैत रहबह। भने कहलह जे दहेजक बिहाड़ि समाजमे उठि गेल अछि। अखन धरि तँ कहियो कोनो काज केलह नहि, तेँ मन घबड़ाएव उचिते छह। मुदा एकटा बात वुझए पड़तह जे हवा-बिहाड़िक जन्म जहिना समाजमे उठैत अछि तहिना समाजे ओकरा रोकबो करैत

अछि। अज्ञानी, लोभी आ समाज विरोधी लोक ओकरा बढ़वैत अछि। मुदा एहिसँ समझदार लोक थोड़े घवड़ाइए। जहिना एक्के खेतमे बगुरोक गाछ रहैत अछि आ नीक-नीक फलोक गाछ रहैत अछि, तहिना समाजोमे होइत अछि। नीकसँ नीक लोक आ अधलाहसँ अधलाह लोक एक्के समाजमे रहैत अछि। हँ, ई बात जरुर अछि जे कखनो अधलाह लोक नीक लोककेँ पछाड़ैत अछि तँ कखनो नीक लोक अधलाह लोककेँ पछाड़ैत अछि।

कर्मनाथ : जँ एहिना होइत रहत ते समाज नीक कोना बनत?

विकास : अखन धरिक जे इतिहास अछि, ओहि आधारपर नीक लोक पछड़ैत रहल अछि। किऐक तँ जहि शक्तिक हाथमे समाज सत्ता रहल ओ धूर्त, बेइमान आ शोषकक हाथमे रहल। तँ ओहि शक्तिक संग इमानदार, मेहनती आ भलमानुस लोककेँ संगठित भऽ मुकावला करै पड़तैक। जहिसँ उठा-पटक हेबे करतै मुदा अंतिम विजय इमानदारेक होएत। किऐक तँ ऐहेन लोकक संख्यो बेसी अछि आ काजो नीक अछि।

कर्मनाथ : तखन फेरि ऐना किअए होइ छै?

विकास : (मुस्की दइत) कम संख्यामे धूर्त, वेइमान कऽ रहितो, बुद्धि आ सम्पति ओकरे हाथमे छै। जे दुनू हथियारक रुपमे काज करै छै। कमजोर, मुर्ख अधिक रहितहुँ अखन धरि पछड़ैत रहल अछि।

कर्मनाथ : एहि बातकेँ अखन छोड़ूँ। हम जहि काजसँ अहाँ लग एलहुँ तहिपर कने विचार कएल जाए। अपने सिर्फ गुरुऐ (शिक्षक) नहि समाज निर्माता सेहो छी। हम्मर बेटी आइक मनुक्ख छी, नहि कि घसल-पिटल परम्पराक। तँ, हमरा मनमे अटूट बिसबास अछि जे हमरा बेटीक विआह हँसी-खुशीसँ हेबे करत। मुदा हम तँ समाजसँ सभ दिन अलग रहलौं तँ, कने चिन्ता मनमे जरुर अछि।

विकास : बौआ, तोरा पितासँ हमरा मतभेद किऐक अछि? से पहिने सुनि लाए। तोहर परबाबा जे रहथुन ओ नामी-गामी लोक रहथि। समाजो अनुकूले रहनि आ समयो तेहने रहै। जहिना हुनका धन-सम्पति रहनि तहिना

मानो-प्रतिष्ठा। जखन ओ मुइला तँ मास दिन धरि सराधक भोज होइते रहलै। हमहूँ ताबे ढेरवे रही, मुदा सभ कुछ मन अछि। तीस गाम नतिकँ खुऔल गेल रहै। एक-एक गाम के एक-एक दिन। गामक (सब जाइतिक) ओहि काजमे जुटल रहै। किऐक तँ काजो भारी रहै। खेबाक सब वस्तुक ओरियानसँ लऽ कऽ नोत पठौनाइ आ खुऔनाइ धरिक काज रहए।

कर्मनाथ : (मुस्की दैत) ई बात हमरा नइ बुझल छल। भने अहाँ कहि देलहुँ।

विकास : करीब पचास-पचपन बर्ख पहिलुका बात छी। ताधरि गाममे दोसर तरहक विचार चलैत छलै। अखुनका जेँका लोकमे दूजा-भाब नै छलै। ओहि समय लोकक जिनगियो छोट छलै। तेकर बाद, करीब पेंइतीस-चालीस बर्ख पहिने, तोहर बाबा मरलखुन। हमहुँ शिक्षक भऽ गेल रही। समाजमे विचारो बदलै लगल छलै। तोहर पिताजी (सोमनाथ) भोजक लेल समाजकँ बैसौलनि। हमहूँ छलौं। ओ (सोमनाथ) कहलखिन जे नअ गामक जे सौजनिया अछि, तते लऽ कऽ भोज करब। किछु गोटे समर्थनो केलकनि। मुदा किछु गोटे विरोधो केलकनि, जइमे हमहूँ छलौं।

कर्मनाथ : विरोध किअए केलिएनि?

विकास : (हँसैत) हमरा सबहक (विरोध केनिहरक) विचार छल जे कोनो भोजमे समाजक लोककँ छोड़ि (आन जाइतिक) अनगोंआकँ न्योत दऽ खुआएव उचित नहि। जते खर्च कऽ भोज करै चाहै छी ओ गौंउएकँ नोत दऽ कऽ खुआउ। गामक कोनो जाइत किऐक ने हुअए, मुदा छी तँ ओ समाज। समाजक काज सदिखन लोक (समाज) कँ होइत छै। कोनो बेर बेगरतामे समाजे ठाढ़ होइत अछि। अनगौंआ ते सिर्फ भोजे खाइत अछि आ खुआबैत अछि। तँ ई काज अधलाह छी।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) ई तँ वैचारिक मतभेद भेल।

विकास : सिर्फ वैचारिके मतभेद नहि, एकरा पाछू वास्तविकतो छै। बेटा-बेटीक विआह लोक आन गाममे करैत अछि। जहिसँ ओ समाज नहि, कुटुम्ब होइत अछि। जनिका संग नोत-पिहान चलिते अछि। मुदा आन गामक

जाइत कऽ समाज मानि खाइ-पीवैक वेवहार बनाएव, उचित नहि। हँ, उचित तखन जखन समाजक सभ जाइत कऽ खुआ, आनो गामक लोककेँ खुआबी। मुदा समाज तँ जीबैतसँ लऽ कऽ मृत्यु धरि संग रहैवला होइत। तँ, आन गामक जाइत सऽ पैध अप्पन समाज होइत अछि। जना कतौ आगि लगै छै तँ समाजेक लोक चाहे कोनो जाइतिक किऐक ने हुअए आबि कऽ मिझबैत अछि। तहिना कियो बीमार पड़ैत अछि, वा कोनो आफत-असमानी होइत छैक तँ समाजे आगू अबैत अछि। अही लऽ कऽ दुनू गोटेक बीच मतभेद अछि। मतभेदे नहि अछि, एक जाइत रहनहुँ खेनाइयो-पीनाइ बन्न अछि। हमरो समाज अलग अछि आ हुनको अलग छनि। सिर्फ एक गाममे छी तँ गौँआ छिआह।

कर्मनाथ : तखन तँ गाम दू समाजमे बँटि गेल अछि।

विकास : (दृढ़तासँ) निश्चित। निश्चित दू भाग मे बँटल अछि। एक-समाजक लोक गौँआसँ जुड़ल अछि आ समाजक लोक अनगौँवा जाइत सभसँ जुड़ल अछि। तँ अहाँ ऐठाम जे कोनो भोज होइए तँ हम खाइले नइ जाइ छी। आ ने अहाँक परिवार हमरा ऐठाम अबैत छथि।

कर्मनाथ : इ तँ जवर्दस्त कारण अछि।

विकास : हमरा संग ऐहेन समस्या अछि जे जँ अहाँ ऐठाम खाइले जाएब तँ अप्पन वैचारिक समाज टुटि जाएत। जँ बैचारिक समाज टुटि जाएत तँ फेरि ओहिना विना जड़ि-पालोक समाजमे मिज्झर भऽ जाएब। जहि समाजमे बलात्कारकेँ धिया-पूताक खेल बुझल जाइत अछि। गारिकेँ मजाक बुझल जाइत अछि आ आर्थिक शोषण माने धनक बेइमानीकेँ परम्पराक चलनि वुझल जाइत अछि।

कर्मनाथ : (मूड़ी डोलबैत) हँ, ई तँ होइत अछि।

विकास : आइ धरिक जिनगीमे हम दुइयेटा काजक संकल्प कऽ करैत एलहुँ। आ अखनो करैत छी। पहिल, समाजक भोज आ दोसर, बेटा-बेटीक विआहमे दहेज, ने लेब आ न देब। जे सिर्फ हमहीटा नहि, अप्पन जे

समाजक लोक अछि, ओ सभ करैत अछि। अही दुनू काजे तोरा परिवारसँ हमरा मनमुटाव बुझहक वा पार्टी बुझहक वा दू समाज वुझहक। अच्छा, आब अपना काजपर आबह। तू तँ अफसर छह, तखन किअए अफसरक समाज छोड़ि गामक समाजमे कुटुमैती करए चाहै छह?

कर्मनाथ : अफसरक समाज कहियौ वा नोकरियाक समाज, ओ अअस्थाइ होइत अछि। जहिना रबड़क बैलूनमे जाधरि हवा रहैत ताधरि अकासमे उड़ैत, मुदा फुटितहि कतौ जा कऽ खसि पड़ैत। तहिना नोकरियोक जिनगी होइत। जाधरि नोकरी रहैत, पावरमे रहैत आ नोकरी समाप्त होइतै जिनगी कत्तऽ सँ कत्तऽ चलि जाइत। मुदा सामाजिक जिनगी से नहि होइत। स्थायी होइत। सामाजिक जिनगी बहुआयामी होइत। जहिना गनगुआरि कऽ सैकड़ो पएर होइत अछि, जहिमे सँ एकाध टुटनहुँ कोनो अन्तर नहि होइत, तहिना। एकर अतिरिक्तो कारण सभ अछि।

विकास : आरो की कारण अछि?

कर्मनाथ : नोकरी करैवला सिर्फ एक्के इलाकाक नहि होइत। जहिसँ जिनगीक ऐहन अनेको काज अछि जहिमे एकरुपता नहि होइत। मुदा सामाजिक जिनगी ओहीसँ विपरीत होइत। जाधरि हमरो नोकरी अछि ताधरि हमहुँ घरसँ बाहर छी, मुदा नोकरी समाप्त होइते गाम चलि आएब।

विकास : बहुत बढ़ियाँ विचार छह। आइ जे देखै छहक जे गाम घरक दशा दिनो-दिन पछुआएल जा रहल अछि, एकर की कारण अछि? एकर कारण अछि गामक पढ़ल-लिखल लोककेँ गाम छोड़ि कऽ चलि जाएब। जाधरि गामक सम्पत्तिमे बुइधिक उपयोग नै हैत, ताधरि गामक सम्पत्ति नीचे मुहे ससरैत जाएत। ओकरा (गामक सम्पत्ति क) आगू मुहे बढ़वैक लेल नव ज्ञानक जरुरत अछि। जखने नव ज्ञानक उपयोग गाममे हुअए लगत तखने नव तकनीक, नव ढ़ंग (लूरि) आबि जाएत। नव तकनीक आ नव ढ़ंग नव मनुष्य पैदा करत। नव मनुष्य पैदा होइते नव समाज बनि कऽ ठाढ़ भऽ जाएत। जे समयक अनुकूल चलए लगत।

कर्मनाथ : (मूड़ी डोलबैत) हूँ-उ-उ।

विकास : एतबे नहि, अपना इलाकाक (मिथिलांचलक) जे अमूल्य व्यवहार, अमूल्य क्रिया-कलाप अछि, ओ धीरे-धीरे घटि रहल अछि। आ ऐहेन बुझि पड़ैए जे घटैत-घटैत मेटा जाएत। लोकक जीवन शैली बदलि रहल अछि, जहिसँ सामाजिक संबंध, कला संस्कृति सभ कुछ प्रभावित भऽ रहल अछि। नान्हि-नान्हिटा काज, नान्हि-नान्हिटा बातमे, लोक तेना ने दिन-राति ओझराएल रहैत अछि जे आगू मुहे ससरैक कोन बात जे पाछुऐ मुहे ढरैक रहल अछि। जहिसँ सदिखन बातावरण दूषित भेल रहैए। अनेरो लोक सदिखन चिन्ता आ तनावमे पड़ल रहैए।

कर्मनाथ : एहि दिशामे समाजक बुद्धिजीवी लोकनिकेँ आगू अबै पड़तनि।

विकास : निश्चित। कोनो समाजकेँ आगू बढ़वैक लेल वा गलत दिशासँ सही दिशा दिशि लऽ जाइक लेल वुद्धिजीविए अगुआइ कऽ सकैत छथि। जेकरा अपने दिशाक बोध नहि छैक ओ आगू मुहे कोना बढ़ि सकैत अछि। ओना पढ़लो-लिखल सभकेँ दिशाक बोध होइते अछि, सेहो बात नहि। जना कहल गेल अछि जे जहि पोथी कऽ पढ़ि लोक ज्ञान अर्जित करैत अछि वैह पोथी लोककेँ अज्ञानोक दिशामे बढ़वैत अछि।

कर्मनाथ : (गंभीर होइत) अपने जे बात कहि रहल छी, ओहि दिशि हमरो धियान अखन धरि नहि गेल छल।

विकास : (मुस्कुराइत) अखन धरि तोहर धियान, एक वेवस्थाक बीच रहलह तेँ नीक-अधला बेरबैक (फुटबैक) ज्ञान नहि भेलह। किऐक तँ व्यवस्था वेवहारक माध्यमसँ चलैत अछि।

कर्मनाथ : (मूड़ी डोलवैत) तखन तँ नीक-अधला वुझैक लेल मनसँ नहि विवेकसँ निर्णय कएल जा सकैत अछि।

विकास : निश्चित। एहिमे एक्को पाइ संदेह नहि। मन निर्णय करैत बुइधिक हिसावसँ। बुद्धि बनैत व्यवस्थाक हिसावसँ। तेँ लोकक जे सोचैक आ बुझैक प्रक्रिया अछि ओ वेवसथाक अनुकूल होइत अछि। मुदा वेवसथा केहेन अछि, ओ एहिसँ आगूक प्रक्रिया छी। हमरा नीक हुअए, ई सभ

चाहैत अछि। मुदा एहिक भीतर प्रश्न उठैत जे अप्पन नीकक संग जँ दोसरकेँ अधला होय, तखन? नीक तँ तखन ने नीक जे अपना संग-संग दोसरोक नीक होए। जँ दोसरकेँ नीक नइ होए तँ अधलो नहि होए। हँ, ई बात जरुर जे किछु काज व्यक्तिगतो होइत अछि, जहिसँ दोसरकेँ मतलब नइ होइत।

कर्मनाथ : (नमहर साँस छोड़ैत) तब तँ विआहमे जे दहेजक चलनि अछि, सेहो ओहने अछि।

विकास : (मुस्की दैत) निश्चित। दहेज लेनिहार तीनि रंगक अछि। पहिल अछि जे जते दहेज लइत अछि ओहिसँ दोबरा-तेवरा कऽ बजैत अछि। दोसर तरहक अछि जे बेटाक विआहमे जते दहेज लइत ओहिसँ कम बेटीक विआहमे दइत अछि वा नहियो दइक विचारमे रहैत अछि। तेसर तरहक अछि जे दहेज लेलाक बादो छिपबै चाहैत अछि। आब तुहीं कहह जे ऐना किऐक अछि।

कर्मनाथ : ऐहन ओझराएल सवालक हल कोना होएत?

विकास : (हँसैत) यैह काज तँ हम अपना समाजमे कऽ रहल छी। उपरसँ नहि बुझि पड़तह, मुदा समाजक भीतर समाज बनि चलि रहल अछि। जहिना बेटा तहिना पढ़ौल शिष्य। तू हमर पढ़ाओल शिष्य छियह, तेँ तोरा हम विसबास दइ छियह, हम्मर जे जरुरत तोरा हुअअ, तहि लेल तैयार छिअह। तोहर बेटी हम्मरो तँ पोतियो छी। तोरा हम शुरुहे सँ जनैत छिअ जे आन नोकरिया जँका तू लेन-देनसँ परहेज केने छह। तोरा एक्को पाइ दहेज कहि खर्च नहि हेतह। तखन तँ बेटा-बेटीक विआह छी। जे वेवहार अदौसँ आबि रहल अछि ओ तँ पुरवै पड़तह।

कर्मनाथ : आइ धरि जे समस्या माथकेँ भरिऔने छल ओ निकलि गेल। मन हल्लुक भऽ गेल। मुदा एकटा बात कहि दइ छी कक्का, हम तँ नोकरिया छी। गनल दिनक छुट्टी अछि तेँ दोहरा कऽ छुट्टी नहि लिअए पड़ए। तहिपर नजरि रखबै।

विकास : (मुड़ी डोलबैत) हमहुँ नोकरी कऽ चुकल छी तेँ छुट्टीक महत्व बुझै छियै। काल्हियेसँ हम तोरा काजक पाछु पड़ि जाएब। परसु फेरि भेंट

हएव। बेटी किछु विशेष पढ़ल छह तेँ काज थोड़े भरिगर जरुर अछि। किऐक तँ गाम-घरमे लड़कीक कोन बात जे लड़को कम पढ़ल-लिखल अछि। बी.ए. पास लड़कीक लेल कमसँ कम एम.ए. पास लड़का चाहिऐक। नहि तँ इंजीनियर, डॉक्टर, वकील तँ चाहबे करिऐक।

कर्मनाथ : आब हम कने हटि कऽ एकटा सवाल पूछै छी। अखनो आ पहिनौसँ देखैत एलौं जे नीकसँ नीक (बेसी स बेसी) पढ़ल लिखल लड़काक संग अनपढ़ लड़कीक विआह होइत अछि वा होइत आएल अछि। ओ उचित बुझल जाइत। मुदा अधिक पढ़ल-लिखल वा पढ़ल-लिखल लड़कीक संग कम पढ़ल वा अनपढ़ लड़काक संग विआह करब, उचित वा अनुचित।

विकास : एहि प्रश्नक उत्तर दोसर दिन देबह। अखन हमर मन तोरा काजमे ओझरा गेल अछि।

चारिम अंक

(रामविलासक घर)

रामविलास : जिनगीक साइठम बर्खमे, आइ वुझि पड़ैत अछि जे निचेन भेलौं सेहो सोलहन्नी नहि, पाँच पाइ चिन्ता अखनो बाकिये अछि। मुदा तइओ आइ अपना कऽ निचेन मानै छी, किऐक तँ जहिना एक दिन बीतने पूर्वज सौंसे माध बीतब मान लेलनि, तइ हिसाबे तँ पाँच पाइ भार बड़ थोड़ भेल। जिनगीक साठि बर्खक संघर्षक (रग्गरघस) उपरान्त जे फल भेटल ओ तँ सुअदगर आ मीठ हेबे करत, तँ मनमे खुशी सेहो अछि।

माधुरी : मनमे खुशी आछि तँ नाचू।

रामविलास : नचै तँ शरीरक भीतर मन अछि। हम कोनो नचनिया छी जे मंचपर नाचब। तखन हँ, एकटा बात मनमे जरुर उपकैए जे अहाँसँ भरि मन गप करी।

माधुरी : ठीके लोक कहैत अछि जे पुरुखक बात आ गाड़ीक पहिया दुनू बरोबरि। जहिना गाड़ीक पहिया घुमैत रहैत अछि तहिना पुरुखोक बात। कहू जे केहेन अकड़हर बात बजै छी जे एते दिन दुनू गोरे संग-संग रहलौं, मुदा भरि मन गप कहियो ने केलौं।

रामविलास : (मुह बिजकबैत) अहाँ कऽ की होइए जे हम फुसिये कहलौं।

माधुरी : अपना की बुझि पड़ैए जे साँचे कहलौं।

रामविलास : सुआइत लोक कहैत अछि जे पुरुख आगू बढ़ैत-बढ़ैत चोर-डकैत, लुच्चा, लम्पट सभ बनि गेल, मुदा मौगी गोबरक चोत जैंका ठामक-ठामहि रहि गेलि। अहीं से पुछै छी जे कहू काल्हि धरि हम कहिया निचेन भेल छलौं आ अहाँ से भरि मन हँसी-खुशीक बात केलहुँ।

माधुरी : कोन बड़का पहाड़ उलटबै छलौं, जेकरा उलटबैमे साठि बर्ख लागि गेल।

रामविलास : (गंभीर होइत) बड़ सुन्दर बात कहलौं। सबसे पहिने ई बात बुझि लिअ जे जहियासँ हम अहाँ एकठाम भेलहुँ आ जाधरि नहि भेल छलौं। तँ पहिने, दुनू गोटेक विआहसँ पहिलुका बात कहि दइत छी। तकर बाद विआहक उपरान्तक बात कहब। जहिया अहूँ अपना गाममे रहैत छलौं आ हमहुँ अपना गाममे।

माधुरी : अहाँक अप्पन कोन गाम छल? हम तँ अप्पन गाम अप्पन नैहर कऽ बुझै छी।

रामविलास : एतवो नइ बुझै छियै जे अप्पन गाम होइत अछि अपना रहने। से ज नइ रहलौं तँ अप्पन गाम कोना भेल? बड़बढ़ियाँ अहाँ अप्पन नइहरकेँ अप्पन गाम कहलिए। मुदा हमरा तँ अपना गामसँ भगा देलक।

माधुरी : के भगा देलक?

रामविलास : गरीबी भगा देलक। जखन हम दसे-बारह वर्खक छलौं तखन बावू दुखित पड़लाह। तीनिये गोरेक परिवार छल, माए-बावू आ हम। हम ताबे खेलाइते-धुपाइते छलौं आ धरिये पहिरैत छलौं। दुखसँ बाबूक हालत दिनो-दिन बिगड़िते जाइत रहनि। असकरे माए बोइनो कऽ कऽ आनए आ बावूओक सेवा टहल करैत रहए। दिन-राति तंग-तंग रहैत छलि। बेबस भऽ एक दिन कहलक जे बौआ गाममे सभ अन्न बेतरे मरि जेवह। गाममे ने कियो काज करौनिहार अछि आ ने अपना कोनो-आए-उपाए छह। तँ कतौ जा कऽ कमा आनह।

माधुरी : गामसँ माइये जाइले कहलनि।

रामविलास : हँ। मुदा ओहो बेचारी की करैत।

माधुरी : गामसँ असकरे कत्तऽ गेलिए?

रामविलास : असकरे कहाँ गेलिए। अपनो गामक आ लग-पासक आनो-आनो गामक लोक, सभ साल पटुआ कटैले, धनरोपनी करैले पूभर जाइ छल। ओकरे सबहक संगे हमहूँ गेलौं। तीन दिने मोरंग पहुँचलौं। ताबे कोसी धारमे पुलो ने भेल रहए। नावेपर पार भेलौं। भीमनगरसँ जगबोनी बस चलैत रहए। कोसी पार भऽ कऽ बथनाहामे बस पकड़लौं। जे नेने-नेने

जगबोनी पहुँचा देलक। जगबोनीसँ पाएरे मोरंग गेलौं। तेसर दिन किरिण डूबैत-डूबैत मोरंग बजार पहुँलौं। ओही दिन हाटो रहए। हम सभ हाटेपर रही कि एकटा थारु, दुनू परानी, आएल रहए। ओ जे हमरा सभकेँ देखलक तँ बुझि गेल जे पछबड़िया सभ छी। लगमे आबिकेँ कहलक जे ऐ देसवाली भइया हमरा संगे चलह। सभ कियो ओकरे संगे विदा भेलौं। जहाँ हाटसँ निकलै लगलौं कि कहलक जे भैया तोरा सभकेँ भुख लागल हेतह तँ किछु खा लाए। दू छिट्टा मुरही आ कचड़ी कीनिकेँ दऽ देलक। सभ कियो गमछाक खोंचड़ि बना मुरही लऽ लेलौं आ खाइते विदा भेलहुँ। तेसरि साँझमे ओकरा अइठिन पहुँचलौं। देखैमे तँ ओ अलबटाहे जेँका बुझि पड़ै, मुदा रहए पूजीगर। आठ जोड़ा बड़द खूँटापर रहए।

माधुरी : कते दिन ओकरा ऐठाम रहलिए?

रामविलास : दू मास रहलिए। एक मास पटुआक काज चललै आ एक मास धनरोपनी।

माधुरी : काजक लूरि कोना भेल?

रामविलास : सभकेँ जना-जना करैत देखियै, तहिना-तहिना हमहुँ करिए।

माधुरी : दू मासमे कत्ते कमेलियै?

रामविलास : डेढ़-डेढ़ सौ रुपैआक फॉंट सभकेँ भेलइ। ओइमे सँ हम सबा सौ रुपैआ गाम पठा देलिए आ पच्चीस रुपैआ लऽ कलकत्ता चलि गेलिए। कलकत्ता तँ गेलिए मुदा कियो चिन्हारए रहबे ने करए। बस स्टैण्डमे उतड़ि एकटा दोकानमे खाइले गेलौं। खाइते रही कि तीनि-चारिटा मटिया चाह पीबैले आएल। ओ सभ अपने बोली बजै। हम खेबो करैत रही आ ओकरे सभ दिस तकबो करैत रही। हमहूँ हाँई-हाँईकेँ खा हाथ धोय, दोकानदारकेँ पाइ दऽ, एक गोरेकेँ कहलिए, भाइ हमहूँ काजे करैले एलौं, कतौ जोगार लगा दाय। ओ सभ अपने संगे हमरो नेने गेल।

माधुरी : मटिया सभ काज की करए?

रामविलास : बोरो उधै आ आनो-आनो सामान सभ उधै। ओकरे लाटमे हमहूँ काज करै लगलौं। बर्ख दिन ओकरे सबहक संगे रहलौं। बर्ख दिनक बाद ओहो सभ गाम आएल आ हमहूँ एलौं। बरखे दिनमे कते गोरेसँ चिन्हारय भऽ गेल। गाम आवि एकटा भीतघर बन्हलौं। बावूओक मन नीक भऽ गेलनि। अपन मासुल लेल रुपैआ रखि अन्न-पानि कीनि कऽ घरमे दऽ देलिए आ डेढ़ मासक बाद फेरि चलि गेलौं।

माधुरी : फेरि मटिये काज करै लगलौं?

रामविलास : हाँ। पाँच बरख धरि मटिया काज करैत रहलौं। तेकर बाद अहाँक संग विआह भेल। विआहक बाद जे कलकत्ता जाइत रही कि दरभंगामे एक गोरे परिवारक संगे हमरे लगमे आबि कऽ बैसिलथि। ओहो कलकत्ते जाइत रहथि। समस्तीपुर तक हमहूँ चुप्पे-चाप बैसल रही, मुदा ओ सभ अपनामे गप-सप करैत। तावे समस्तीपुर तक छोटकिये गाड़ी चलै। समस्तीपुरसँ बड़की गाड़ी कलकत्ता जाए। जखन समस्तीपुर टीशन लगिचाइत कि ओ हमरा कहलनि, वौआ कतऽ जेबह। हम कहलिएनि, कलकत्ता। ओ कहलनि जे हमहू कलकत्ते जाएब। हमरा समानो सभ अछि आ दूटा बच्चो अछि, तँ कने समस्तीपुर टीशनमे बच्चा सभकँ सम्हारि दिहह। हमहूँ सैह केलौं।

माधुरी : समस्तीपुर टीशनमे जे गाड़ी पकड़लियै ओ सोझे कलकत्ता लऽ गेल कि बीचमे कतौ फेरि बदलै पड़ल।

रामविलास : नहि। बीचमे कतौ नै बदलए पड़ल। समस्तीपुर टीशनमे जे गाड़ीपर बैसलौं , तखनसँ ओइह चाहो पिअबथि आ गपो-सप करै लगलौं। ओ अपने इलाकाक रहथि। हिन्द मोटर कारखानामे नोकरी करैत रहथि । इंजीनियर रहथि। देखैमे तँ साधारणे बुझि पड़थि, मुदा ओ राक्षात् देबता रहथि। ओ कहलनि जे बौआ तू हमरे संगे चलह। हमरे ऐठाम रहिहह आ तोरा हम करखन्नेमे काज धरा देवह। तहियासँ हम हुनके ऐठाम रहै लगलौं।

माधुरी : (मुस्की दइत) अखन धरि विआहसँ पहिलुके जिनगीक बात कहलिए।

रामविलास : हँ। विआहक बाद तँ अहूँ आबिये गेलहुँ आ देखवे करैत एलिए जे सालमे एक बेर, महीना दिनक छुट्टीमे अवैत छेलौं। तहि एक मासमे जे-जना घरक काज रहैत छल ओकरे सम्हरैमे महीना बीति जाइत छल। तखन आब अहीं कहू जे हम कहिया निचेन भेलौं।

माधुरी : अच्छा, आब अपन खिस्सा-पिहानी छोड़ू। काल्हि तँ बौआक (मदनक) रिजल्ट निकलिये गेल। पढ़ाइयो ओकर समापते (समाप्ते) भऽ गेलै। आब ओकर विआह कऽ लिअ।

रामविलास : अपनो मनमे सैह अछि। मुदा अखन धरि तँ घरक गारजन अहाँ रहलौं हम तँ सभ दिन बाहर खटलौं। घरक तीत-मीठ तँ बुझलियै नहि। आब रिटायर कऽ कऽ एलौं हेँ। आब जे घरक भार उठबै चाहब से हमरा बुते सम्हरत।

माधुरी : कोनो काज केने लोक काज सीखैत अछि। अहाँ कतबो अनाड़ी छी तइयो तँ पुरुखे छी। हम कतबो जीवनी छी तइयो तँ स्त्रीगणे छी। घरक काज सम्हारि सकै छी, मुदा घरसँ बाहरक काज कोना सम्हारल हैत।

रामविलास : अहूँक बात एकतरहक जरुर अछि। मुदा आब तँ तीनि गोटे भेलौं। मदनोक पढ़ाइ समापते भऽ गेलए। तँ सभसँ पहिने ओकर विआह कऽ लेब अछि।

(विकासक आगमन)

रामविलास : (हँसैत) आउ, आउ मास्टर सहाएव। अहोभाग्य हम्मर आ हमरा परिवारक। बहुत दिनक बाद अपनेसँ भेटि भेल। शरीरसँ स्वस्थ रहै छियै की ने?

विकास : हँ।

रामविलास : परिवारक सभ आनन्दसँ छथि की ने?

विकास : हँ। बच्चा (बेटा) हाइ स्कूलमे मास्टरी करैत अछि। अपने तँ आठ साल पहिने रिटायर भऽ गेलौं।

रामविलास : (मुस्कुराइत) वाह, वाह। हमरो मदन एम.कम. केलक। काल्हिये ओकर रिजल्ट निकललै। फस्ट डिवीजन भेलइ। (पत्निसँ) अनासुरती मास्टर सहाएव पहुँच गेलथि, भाग्य हम्मर। किऐक तँ मास्टरे सैहबक पढ़ौल मदन छिअनि, तँ सबसँ पहिने मास्टर सहाएवकेँ मिठाइ खुअविअनु।

(माधुरी जाइत अछि)

विकास : मदन कहाँ अछि। बिना असिरवाद देने मिठाइ कोना खाएब।

रामविलास : ओ तँ आइये भोरुका गाड़ीसँ दरभंगा गेल। अप्पन संगियो-साथी आ प्रोफेसरो सभसँ भेटि करए गेल। भऽ सकैत अछि सौझुका गाड़ीसँ घुमत। नइ जँ संगी सबहक संगे सिनेमा देखै लगत तँ काल्हि कखनो आओत। हमहुँ पैछला मास रिटायर कऽ गेलौं। मदनेक दुआरे घरक सभ काज जक-थक पड़ल अछि। किऐक तँ जाधरि ओ पढ़ैत छल ताधरि घरक काजमे कोना लगबितिए। मुदा सोचै छी जे सभसँ पहिने ओकर विआह कऽ ली। ओना अखन धरि घरो बनौनाइ पछुआएले अछि।

विकास : हँ, हँ, बड़बढ़ियाँ विचार अछि।

रामविलास : एकटा भार मास्टर सहाएव अहूँ कऽ दइ छी, किऐक तँ गाम-घरक (समाजक) बात अपने बुझै नइ छी। घन्यवाद घरेवालीकेँ दी जे वेचारी स्त्रीगण रहितौं अखन धरि घर सम्हारि कऽ चलौलनि। हम तँ जिनगी भरि केवल कमेलहुँ, एहिसँ बेसी तँ किछु केलौं नहि। अपनेकेँ यैह भार दइ छी जे मदनक विआह कतौ करा दिऔ।

विकास : भार तँ बड़बढ़िया देलहुँ, मुदा.......।

रामविलास : मुदा की?

विकास : बेटा-बेटीक विआह आब विजनेस भऽ गेल अछि। जइसँ हमरा सख्त घृणा अछि। सत्तरि वर्खक जिनगीमे, सैकड़ो विआहक अगुआइ केलौं मुदा एकोटामे लेन-देन नहि केलौं। तखन आब अहीं कहू जे ई भार हमरा उठत।

(प्लेटमे मिठाइ नेने माधुरीक प्रवेश)

रामविलास : मास्सैब, लऽ दऽ कऽ एकटा बेटा अछि, अगर जँ ओकरो बेचियै लेब तखन मुइलाक बाद एक चुरुक पाइनियोकेँ देत। बेचलाहा बेटा जँ देवे करत ते ओहिसँ थोड़े सबुर हैत।

विकास : (मुस्कुराइत) कहलियै तँ बड़बढ़िया, मुदा आब लोक थेड़े ई बात बुझैत अछि। आब तँ लोककेँ रुपैआक आगि मनमे लागि गेल छैक। रुपैइयेकेँ धरम-करम सभ वुझैत अछि। समाजोक ऐहेन रुखि भऽ गेल छैक जे जेकरा रुपैया छैक ओकरे पूछैए आ जकरा नइ छै ओकरा कियो ने पूछैए।

रामविलास : (मुस्कुराइत) मास्सैब, हम अपन बात कहै छी, जाधरि हमहूँ नइ बुझै छेलिए ताधरि मनमे सदिखन रुपैऐक बात रहैत छल। संतोष कऽ एकटा शब्द मात्र बुझै छेलिए। मुदा धन्यबाद ओहि इंजीनियर सहाएवकेँ दिअनि जे आखिक परदा हटा देलनि। आब रुपैआ कऽ एकटा साधन मात्र बुझै छी। जिनगी नहि।

विकास : ओ इंजीनियर के छलाह?

रामविलास : हुनकर घर अपने इलाका छनि मुदा बच्चेसँ ओ कलकत्तेमे रहलाह। ओतइ पढ़वो केलनि आ हिन्द मोटरमे नोकरियो केलनि। बहुत दिनक बात छियै, हमहूँ कलकत्ता जाइत रही आ ओहो दरभंगामे गाड़ी पकड़ि जाइत रहथि। गाड़िएमे भेंट भेलाह। अपने संगे हमरो लऽ जा पहिने तँ, उठे काजमे घरौलनि मुदा किछुए दिनक बाद हमरो परमानेंट नोकरी भऽ गेल। सदिखन ओ यैह कहथि जे राविलास गरीबक पूँजी मेहनत छियै। तँ मेहनतकेँ अपन दोस्त बना कऽ चली। हुनके परसादे हम हेड मिसतिरी भऽ के रिटायर केलौं। मुरुख रहितौं हम कमा कऽ बुर्ज लगा देलिए।

विकास : की बुर्ज लगा देलिए?

रामविलास : जना-जना आमदनी बढ़ैत गेल तना-तना अपन कारोबार बढ़बैत गेलौं। जाबे मशीनक ज्ञान नहि भेल छल ताबे एकटा सेकेण्ड हेंड टैक्सी कीनिलौं। एकटा ड्राइवरकेँ पचास रुपैया रोजपर चलवैले दऽ देलिए।

अपन जे दरमाहा हुअए ओहिमे अधा गाम पठाबी आ आधा जमा करी। किछुए दिनक बाद पुरना टेक्सी कऽ बेचि नवका कीनि लेलैं। तखन भड़ो वेसी हुअए लगल। अपनो मिसतिरीक हेल्परसँ मिसतिरी बनि गेलौं।

विकास : बाह-बाह। तखन ?

रामविलास : जखन मिसतिरी बनि गेलौं तखन दरमहो दोवरा गेल। आ गाड़ीकेँ बनौनाइ सीखि लेलौं। आठ घंटा करखन्नामे डयूटी करी बाकी समयमे बजारक गाड़ी सभके ठीक करै लगलौं। फेरि दोसर टेक्सी लेलौं। ओहो भाड़ापर लगा देलिए मन पड़ैए तँ हँसी लगैए। जहिना रुपैयाक लेल मन जरल रहैत छल तहिना रुपैआक बरखा हुअए लगल।

विकास : बाह-वाह। तखन?

रामविलास : आमदनी देखि मन हुअए लगल जे कलकत्तेमे जमीन कीनि मकान बना ली। मुदा जखन हुनका (इंजीनियर के) पुछिलिएनि तँ ओ कहलनि जे विचार तँ बड़बढ़िया छह, मुदा मुरुखपाना हेतह। अपना इलाका सन दुनियामे कोनो इलाका नहि अछि। खाली पाइये सभ कुछ नहि ने छियै। ऐठाम ने खेत कीनह आ ने मकान बनावह। हँ जाबे नोकरी करै छह ताबे किछु अस्थायी (टेमप्रोरी) कारोबार करै छह तँ करह। मुदा रिटायर भेलापर गाम चलि जइहह।

विकास : किअए गाम अबैले कहलनि?

रामविलास : हमहूँ ई बात पुछलिएनि ते बुझवैत कहलनि जे देखहक अपन इलाका, बजारक हिसाबे, बड़ पछुआएल अछि। पछुआएल इलाकामे लोकक आमदनियो आ जिनगिओ पछुआएले रहै छै। मुदा अइसँ ककरो घवड़ेबाक नहि चहियै। कोनो इलाका अगुआएल अछि ओहिठामक लोकक मेहनतसँ। जँ लोक मेहनत नहि कऽ कऽ भागत तँ ओ इलाका अगुएतै कोना?

विकास : (गंभीर होइत) बड़ पैघ बात कहलनि।

रामविलास : तहि बीच मदन चिट्ठी लिखलक जे बाबू अपने गाम होइत 'राष्ट्रीय राज पथ' (एन.एच.डव्लू) बनि रहल अछि। अपने तँ चिट्ठियो ने पढ़ल होइत अछि, हुनके पढ़ैले देलिएनि। चिट्ठी पढ़ि ओ मने-मन खूब हँसलाह। कहलनि जे रामविलास अहाँ मिसतिरी छीहे, आब अहाँक कलकत्ता गामे भऽ जाएत। हमरा कोनो अरथे ने लागल। तखन ओ वुझाकेँ कहलनि जे नोकरियो लगिचाएले अछि आ बड़का सड़को बनिए रहल अछि। ठाठसँ ऐठामक सभ गाड़ी बेचि एकटा नमहरका बस कीनि लेब। ताबे वेटोक पढ़ाई समापते भऽ जाएत। बेटाकेँ वस दऽ देबइ आ अपने एकटा लेथ मशीन कीनिकेँ रोडे साइडमे बैसा देबै। हमहूँ खेत-पथार नइ कीनिलौं। सिर्फ घर लग तीनि कट्ठा कीनि लेलौं।

विकास : बड़ सुन्दर विचार अछि।

रामविलास : ओना अखन सभ काज पछुआएले अछि। ने घर बनेलौं हेँ आ ने वस कीनिलौं हेँ। मुदा तीस लाख रुपैआ हाथमे रखने छी। तेहिसँ सभ काज भऽ जाएत। अपनो नोकरिए करैत छेलौं आ बेटो पढ़िते छल, तँ कोना करितौं। आब पाइक भुख मेटा गेल। दुनियाँ देखैक ढ़ंगो बदलि गेल।

विकास : दुनियाँ देखैक की ढ़ंग बदलि गेल?

रामविलास : जाबे मिसतिरी नइ बनल छलौं आ कम आमदनी छल, तावे जे लोकक हाइ-फाँइ देखियै तँ हुअए जे कोन दरिदरा भगवान हमरा सभकेँ जन्म देने छथि जे सभ दिन सभ चीजक अभावे रहैए। मुदा जखन मिसतिरी बनलौं आ आमदनी बढ़ल, तहियासँ वुझि पड़ै लगल जे हमरा सन-सन दरिद्र तँ सौंसे दुनिए भरल अछि। जहिसँ मनमे संतोषक अंकुर जनमै लगल। आब ओ अंकुर विशाल गाछक रुपमे भऽ गेल अछि। जहिसँ आखिक इजोत सुन्दर होइत गेल। आब वुझि पड़ैए जे दुनिया बड़ सुन्दर अछि।

विकास : की सुन्दर?

रामविलास : आब देखै छी जे दुनिया, स्वर्गोसँ सुन्दर आ हजारो तीर्थ स्थान मिलौलासँ जेहेन होइत, तहूसँ पवित्र आ पैध अछि। कोनो देवस्थानमे

गनल-गूथल देवताक वास होइत मुदा दुनियारुपी तीर्थ स्थानमे अरबो-अरब देवता वास करैत अछि। किऐक लोक एहि देवस्थानसँ हटै चाहत। मनमे संकल्प शक्तिक जन्म भेल। जे संकल्प शक्ति विचारक रास्ता बदलि देलक। जहिसँ जिनगी फूलोसँ हल्लुक बनि गेल अछि।

विकास : ई तँ दुनियाँ देखैक नजरि भेल, मुदा अपना जिनगीमे की सभ आएल?

रामविलास : जाधरि जिनगी नहि बदलल छल ताधरि कमेनाइ-खेनाइ मात्र बुझैत छलहुँ। मुदा आब दोसरकेँ मदति करब बुझै लगलौं। अनका हाथे जे अपन मेहनत बेचै छलौं ओ मेहनत आब अपना काजमे लगबै लगलौं। जहिसँ मनक गुलामी मेटा गेल।

विकास : आव अपना काज दिशि आउ। जहिना अहाँक लड़का पढ़ल-लिखल छथि तेहने एकटा लड़की हमरो नजरिमे अछि। बी.ए. पास ओ लड़की अछि। शील, स्वभाव, आ गुणक भंडार अछि। शुद्ध लछमी पात्र। ओहन लड़की भगमन्ते घरमे जन्म लैत अछि।

रामविलास : मास्सैब, हम मदनक पिता जरुर छिअनि मुदा ज्ञान दइवला गुरु तँ अहीं छिअनि। तँ, मदनकेँ अहाँ अपन बेटा वुझि जतए विआह करा देवनि, हमरा दिससँ एको-पाइ आपत्ति नहि। पाइ-कौड़ीक हमरा एको-पाइ लोभ नहि अछि।

विकास : (मने-मन खुश होइत) देखिऔ ओ लड़की एकटा पैध अफसरक छिअनि। ओ अपनो साक्षात् देवता छथि। ओना ओहो (अफसर) हमरे पढ़ाओल छथि, तँ हमरापर अटूट विसवास छनि। जे कहबनि से ओ जरुर करताह। मुदा आइ-काल्हि देखै छियै जे झूठ-फुस लऽ कऽ शादी-विआहमे झगड़ा-झंझट भऽ जाइत छै। खास कऽ स्त्रीगणक चलैत। जँ से सभ नइ हुअए ते हम एहि काजमे पड़ब।

रामविलास : मदन तँ अखन नहि अछि, नइ ते अहाँ के संग लगा दइतौं। ओना हम कन्यागत नहि बरपक्ष छी, तँ पहिने पाएर कोना उठाएब। मुदा अहाँ ऐठाम जेबामे ते कोनो असोकर्ज नहि अछि। चलू हम अहींक संग चलै छी। आ कन्यागतसँ गप-सप करा दिअ।

माधुरी : माहटर बावू, बेटा तँ हमरो छी आ पुतोहुओ हेती, तेँ, एकटा बात हमहूँ कहै छी। लोक सभ बजैत अछि जे दुनिया बड़ आगू बढ़ि गेलई, ई तँ नीक बात। जते आगू दुनियाँ बढ़तै तते आगू सभ बढ़त। मुदा हम सभ तँ मिथिलाक गाममे रहै छी, जइ ठाम अखनो लोक पाएरे नैहर-सासुर करैत अछि। कोनो सोखे तँ नहि करैत अछि। अभावमे करैत अछि। शहर-बजारक लोक हवाई-जहाजपर उड़ैत अछि आ हमरा सबहक सवारी अखनो नाव अछि। तेँ, एहि सभकेँ नजरिमे राखब जरुरी अछि।

विकास : (ठहाका दइत) ई सभ कहैक जरुरत नहि अछि। पहिनहि कहि देलौं जे कन्या लछमीपात्र छथि। साक्षात् लछमीक आगमन परिवारमे हाएत।

रामविलास : मास्सैब, शुभ काजमे बिलंब नहि करक चाही। हमरो कपार परक, अंतिम भार उतड़ि जाएत, जे पाँच पाइ चिन्ता अछि ओहो मेटा जाएत। तेँ, हम्मर विचार अछि जे हमहूँ अपनेक संग चलि, सभ बात आइए फरिच्छा लेब।

पाँचम अंक

(विकासक दरवज्जा। विकास, रामविलास आ तीनि चारि गोटे बैसल)

विकास : राधेश्याम, कने कर्मनाथ बावूकँ बजौने आवह?

(राधेश्याम जाइत अछि)

रामविलास : कते दूरपर हुनकर घर छनि?

विकास : थोड़वे दूरपर छनि। लगले चलि औता।

रामविलास : मास्सैब, जखन ऐठाम धरि आबिए गेलहुँ तखन कहुना काज कऽ सलिटिआइए देवैक।

विकास : देखियौ, हम तँ अपना भरि परियास करबे करब तखन तँ.........।

(राधेश्यामक संग कर्मनाथ अबैत)

विकास : आउ, आऊ कर्मनाथ बावू। हमरा तँ होइत छल जे अहाँ गाममे छी की नहि। मुदा संयोग नीक अछि।

कर्मनाथ : अखने हमहूँ मामा गाम (मात्रिक) सँ एलौं। ममो संगे एलाह हेँ।

विकास : हुनको किअए ने संगे नेने ऐलिएनि?

कर्मनाथ : कोना नेने अवितिएनि। राधेश्याम सोझे कहलक जे विकास कक्का बजौलनि अछि।

विकास : (रामविलासकँ देखवैत) हिनका तँ अहाँ नहि चिन्हैत हेबनि। हिनकर घर सुन्दरपुर छिअनि। हिनका एकटा लड़का छनि जे एहिवेर एम. कम. केलनि अछि। काल्हिये रिजल्ट निकललनि हेँ। ओना ओ लड़का हमरे पढ़ौल छी मुदा किछु दिन पहिलुका देखल अछि। मुदा लड़का दिव हेबे करत।

(कर्मनाथ मुस्कुराइत)

रामविलास : रिजल्ट सुनि बौआ पराते भिनसुरका गाड़ी पकड़ि, संगी-साथी सभसँ भेंट करै चलि गेला हें। भऽ सकैत अछि जे रौतुका गाड़ीसँ आबि जाए, नहि जँ संगी साथीक संग सिनेमा देखै लगए तँ काल्हि आओत।

विकास : रामविलास जी, हिनका (कर्मनाथ बावूकेँ) तँ अहूँ नहिये चिन्हैत हेबनि। इहो हमरे पढ़ौल छथि। मुदा हमरा गामक रत्न छथि। गामक पहिल फुल। बड़का अफसर छथि। भगवान ऐहेन बेटा सभकेँ देथुन। जेहेने पैघ अफसर तेहने इमानदार। सज्जनक तँ चरचे नहि। ओना जिनगी भरि हमहूँ गुरुआइए केलहुँ। मुदा औझुका शिक्षक सभ जेँका नहि, जे अपनो पढ़ौल विद्यार्थी, सोझामे सिगरेट, बीड़ी पीवैत रहत आ शिक्षक मुड़ी निच्चा कऽ जाइत रहताह। आजुक जे छौँड़ा-माड़रि सभ भऽ गेल अछि ओ ने माए-बापकेँ आदर करैत अछि आ ने शिक्षककेँ।

रामविलास : (हड़वड़ा कऽ कर्मनाथकेँ प्रणाम करैत, मने-मन सोचैत जे कहुना कुटुमैती भऽ जाए।) मास्सैब अहाँकेँ ते हम कहि देलहुँ जे भलेहीं मदन हम्मर बेटा छी मुदा शिष्य तँ अहींक छी। तँ, मदनपर जते अधिकार हमर अछि ओहिसँ मिसिओ भरि कम अहूँक नहि अछि। माए-बाप जन्म दैत अछि मुदा जिनगीक रास्ता तँ गुरुऐ बतबैत छथि।

विकास : (मुस्की दैत) अहाँ दुनू गोटे सोझामे छी, तँ हमरा किछु बजैत असोकर्ज नहिये भऽ रहल अछि। कर्मनाथ बावू, अपने तँ बड़ ज्ञानी लोक छी, तँ हम किछु बाजी से हमरा उचित नइ वुझि पड़ैए। मुदा दू परिवारक बीचक संबंध अछि तँ चुप्पो रहब उचित नहि।

(कर्मनाथो आ रामविलासो ठहाका मारि हँसैत)

हम दुनू गोटेकेँ परिचय करा देलौं। आब एकटा बात ऑझुका समयक संबंधमे कहि दइ छी।

रामविलास : अबस, अवश्य अपनेक कहि देल जाओ।

विकास : अखुनका समयक संबंधमे कहि रहल छी। अहाँ (कर्मनाथ) जेठरैयति परिवारक छी जे आब निच्चा मुहे भऽ रहल अछि। उपरसँ निच्चा उतड़ैत आ निच्चासँ उपर चढ़ैत, एक सीमापर दुनू गोटे (सामाजिक,

आर्थिक आ शैक्षणिक) पहुँच गेल छी। तैँ, दुनूक बीचमे संबंध बनब समयानुकूल अछि। रहल बात लड़का-लड़कीक। अपना ऐठामक जे सामाजिक ढ़र्रा बनि गेल अछि, ओकरा हम झुस (घटी) बुझै छी। किऐक तँ मुरुख लड़कीक संग पढ़ल-लिखल लड़काक विआहक चलनि अछि। जेकरा सभ कियो नीक बुझि अंगीकारो कऽ नेने छी। मुदा एहिठाम एकटा प्रश्न उठैत अछि जे मुरुख लड़काक संग पढ़ल-लिखल लड़कीक विवाह कऽ नीक मानल जाए वा अधलाह। मुदा अहाँ दुनूक संबंधमे तँ से बात नहिये अछि। तैँ, एहि संबंणमे किछु कहैक जरुरते ने अछि। हृदयसँ असिरवाद बुझी वा धन्यवाद देव बुझि हम दुनू गोटेकेँ (मदन आ चम्पा) दइत छिअनि।

रामविलास : (हँसैत) से की?

विकास : जहिना अहाँक मदन रत्न भेलाह (बोनिहार परिवारक दुआरे) तहिना हम चम्पो कऽ (नारी शिक्षाक) बुझैत छिअनि। तैँ, चाहे रत्नक हार होइ वा फुलक, एकोटाक माला बनैत आ सओक। मुदा दुनू गरदनिएमे पहिरल जाइत। भलेहीं एकक डोरा सबहक नजरिपर पड़ै आ दोसराक झँपाइल होय।

रामविलास : (हँसैत) मास्सैब, हम तँ मुरुख छी तैँ अहाँक सभ बात बुझियो ने रहल छी, मुदा एते बिसवास मनमे जरुर अछि जे अहाँ हमर अधला कखनो नहि सोचब।

विकास : देखियौ, दुनू गोटेक विचार एक रास्ताक अछि, तैँ एहि संबंधमे किछु अटकलबाजी करब उचित नहि। आब काजक गप कऽ आगु बढ़ाउ।

कर्मनाथ : हमरा मनमे एक्को पाइ ई शंका नहि अछि जे हम लड़काकेँ नहि देखलौं। मुदा जखन ऐठाम (हमरा गाम) पहुँच गेल छी तँ कने हम अप्पन दुनू भाँइयोकेँ बजा लइ छिअनि। एहि दुआरे नहि कि हुनकासँ पूछब जरुरी अछि, बलकि एहि दुआरे जे हुनको सबहक मनमे ई नइ होइन जे भैया हमरा सभकेँ कहबो ने केलनि। ततवे नहि, हम तँ चाहब जे अपना बेटिओ कऽ देखा दी।

रामविलास : आइ अहाँक बेटी तँ सभ भार अहाँ उपरमे अछि। मुदा विआहक उपरान्त तँ हमरो पुतोहूऐ हेतीह। तँ, जखन ऐठाम धरि आबिये गेल छी ते असिरवादो देनहि जेवनि।

विकास : (हँसैत) बड़बढ़िया। राधेश्याम, तू कने फेरि दोहराकँ कर्मनाथ बावू एहिठाम जा दुनू भाँइयो (लालबावू आ नूनू) आ चम्पोकँ बजौने आबह।

(राधेश्याम बजवैले जाइत)

कर्मनाथ : कक्का, हम्मर बेटी आइक मनुक्ख छी। सिर्फ पढ़ले-लिखल अछि, ततबे नहि। कमप्युटरक ज्ञान सेहो छैक। परिवार चलवैक सभ लूरि छैक। आ सभसँ पैघ गुण ई छैक जे मिथिलाक सभ व्यवहार कऽ (जे नारी लेल अछि) ज्ञाने नहि व्यवहारमे सेहो छैक। ओ सिर्फ कुशल गृहणिये नहि अपना पाएरपर ठाढ़ भऽ जीवन-यापन करैक लूरिसँ सेहो सम्पन्न अछि।

रामविलास : कर्मनाथ बावू, हम मुरुख रहितौं ओहन विचारवान आदमी लग रहि जिनगी बितेलौं, जिनका हम देवता बुझैत छिअनि। ओ हमरा अपना पाएरपर ठाढ़ भऽ जीवैक लूरि (ज्ञान) सिखा देलनि। सदिखन ओ कहथि जे श्रमिक अपन श्रम पूँजीपतिक हाथ बेचि लइत अछि, जे उचित नहि। तँ, हम अप्पन श्रमकँ अपना काजमे लगेबाक सतत प्रयास करैक चेष्टा करी। ओना हमहूँ जिनगी भरि नोकरिए केलौं किऐक तँ ऐहेन मजबूर परिवारमे जन्म भेल छल जे दोसर चारा नहि छल। मुदा आब हम एते कमा लेलौं जे अपना परिवारकँ कहियो नोकरीक लेल मुहताज नहि होअए पड़त।

(लालबावू, नूनू आ चम्पाक प्रवेश)

विकास : रामविलास जी यैह बच्चिया थिक।

(एकटकसँ रामविलास चम्पा कऽ देखि)

रामविलास : मास्सैब, हमरा पाइक भुख नहि, मनुक्खक भुख अछि। (हँसैत) हम अपन बेटेटा नहि, विआहोक खर्च करब।

कर्मनाथ : (मुस्की दइत) बौआ तोरा दुनू भाँइ (लालबावू आ नूनू) कैँ हम एहि दुआरे बजौलियह जे जहिना बेटी तहिना भतीजी, तैँ तोहूँ दुनू भाँइ अप्पन विचार दाए।

दुनू भाइ : (लालबावू आ नूनू) भैया, जहिठाम अहाँ आ विकास कक्का छी, तहिठाम हम सभ की बाजब। अहाँ लोकनिक पसन्द हमरो पसन्द।

कर्मनाथ : (चम्पासँ) बाउ, गोड़ लगहुन।

(सभसँ पहिने चम्पा विकासकैँ, तेकर बाद अप्पन पिता कर्मनाथकैँ तेकर बाद रामविलासकैँ गोड़ लगलक)

रामविलास : (हजारी नोट दैत) भगवान जिनगी दथि। मास्सैब, भलेहीं हम बेटावला छी मुदा कर्मनाथ बावूक आगूमे किछु नहि छी। धन्यवाद अहाँ कऽ (विकास बावू) दैत छी जे कीचड़सँ निकालि सिंहासनपर पहुँचा देलौं।

विकास : रामविलास जी, हम दुनू गोटेसँ आग्रह करब जे शुरुहेक लगनमे काज (विवाह) निपटा लेब।

रामविलास : हमरा दिशिसँ कोनो आपत्ति नहि।

विकास : एकटा बात आरो। अखन जे लोकक रुखि भऽ गेलैए जे खूब लाम-झामसँ विआह करैए से नहि हेवाक चाही। जेते खर्च (चाहे कन्यागतक होय वा बड़क पिताक) झुठ-फुसमे करब, ओ बेकार। ओ पइसा जँ बँचा कऽ कोनो काज कऽ लेव तँ ओ जिनगीक लेल होएत। हम अप्पन बात कहै छी, हम्मर जे विवाह भेल छल ओहिमे सिर्फ पितेजीटा बरिआती गेल रहथि। तइयो काज भेलइ। तैँ, कौआसँ खइर लुटाएब, कोनो नीक बात नहि।

रामविलास : अपनेक विचारसँ हमहूँ सहमत छी। जना कर्मनाथ बावू कहताह, तहिना करब।

कर्मनाथ : हम्मर कोनो विचार नहि, जना विकास कक्का कहताह, तहिना करब।

विकास : विआहक बात तँ समपन्ने जैँका भऽ गेल। आब जँ किनको मनमे किछु बात बाकी हुअए से अखने बाजि चलू।

कर्मनाथ : हम जहि समाजमे अखन धरि छी ओहि समाजक बीच तँ बेटीक विआह नहियेे कऽ रहल छी, मुदा ओहि समाजमे तँ बहुत अधिक संबंध (लेन-देन) बनि चुकल अछि। तँ, हम आग्रह करब जे एक बेरि, विआहक बाद, बेटीकेँ अपना संगे लऽ जाएव। ओकरो सखी-बहीना छै तेकरो सभसँ भेटि-घाँट कऽ लेत। तकर बाद तँ अहाँक ऐठाम रहत आ ओइह अपन घर हेतैक।

विकास : हम नीक जेँका अहाँक बात बुझि नहि सकलौं, कर्मनाथ बावू।

कर्मनाथ : काकाजी, जहि समाज (अफसर समाज) मे रहैत छी ओहिक बीच पच्चीसो-पच्चास काज (विआह, मूड़न इत्यादि) सभ साल होइत छैक। जहिमे हमहूँ आमंत्रित होइत छी। ओहिमे हम तँ सिर्फ भोजने करैत छी, मुदा प्रति काज पाँच सएसँ दू हजार धरि खर्च होइत अछि। मुदा हम तँ ओहि समाजसँ अलग भऽ कऽ अप्पन काज कऽ रहल छी। तँ, ओहि समाजमे रहैक लेल हमरो किछु करै पड़त।

विकास : ओ- ऽऽऽ। हँ ई तँ उचिते छी। की यौ रामविलास जी अहूँक किछु समस्या अछि?

रामविलास : हँ। समस्या तँ हमरो अछि। मुदा हम्मर समस्या दोसर तरहक अछि।

विकास : की?

रामविलास : अपने कऽ कहिये देने छी जे किछुए दिन पहिने नोकरीसँ निवृत भेलौं आ मदनो पढ़िते छल। मरदा-मरदी कियो घरमे छेलौं नहि, जहिसँ घरक सभ काज पछुआएल अछि। जना, घर बनौनाइ, काज सभ ठाढ़ केनाइ, जहि कऽ पुरबैमे कमसँ कम छह मास जरुर लगत। अखन घरो ने अछि, जहिमे रहब। तँ हमरो किछु समय चाही। ओना विआह अखन कइओ लेब, मुदा जहाँ धरि बिदागरीक सवाल अछि ओ अगिला साल करब।

विकास : की सभ काज करैक अछि?

रामविलास : (हँसैत) मास्सैब, जाधरि कमाइत छलौं ताधरि अपनो अनके घरमे रहैत छलौं। वेटो होस्टलेमे रहैत छल। सिर्फ पत्नियेटा घरमे रहैत छेली, तँ ने बेसी घरक जरुरत छल आ ने बनवैक समय भेटल। आब दुनू

बापूत निचेनो भेलौं आ दुनू काजो (नोकरी आ पढ़नाई) सम्पन्न भऽ गेल। तँ, दुनू ठाम (रहबोक लेल आ कारोबार करैक लेल) घरो बनवैक अछि आ कारोवार शुरुह करैक अछि।

विकास : की सभ कारोबार करैक विचार अछि?

रामविलास : सभसँ पहिने रहैक लेल चैघारा घर बनाएव। तीन अलंग अंगन मे रहत आ एक अलंग दरवज्जा रहत। तेकर बाद चौकपर (एन.एच. कऽ बगलमे) तीनिटा कोठरी बनवैक अछि। जहिमे एकटा कोठरीमे लेथ मशीन बइसाएब। दोसरमे अप्पन कारोवार (मिसतिरिआइक) रहत आ तेसरमे बच्चा कऽ ऑफिसनुमा बना देवइ, जहिमे ओ अप्पन कारोवारक हिसाव-किताब राखत।

विकास : वाह, बड़सुन्दर योजना अछि। तेकर बाद की करब?

रामविलास : घर बनौलाक बाद दुनू बापूत कलकत्ता जाएब। ओतुक्के बैंकमे रुपैइयो अछि। रुपैइया उठा इंजीनियर सहाएवकेँ संग कऽ एकटा वस बेटा लेल कीनब। अपना लेल मशीन आ जखन पुतोहू कमप्युटर सीखने छथि तँ हिनका लेल एकटा कमप्युटर कीनब। तेकर बाद जे रुपैया उगरत ओहो आ सभ सामानो बसेमे लादि कऽ लऽ आनब। एहि सभ काज करैमे छह माससँ बेसिये लाइग जाएत।

विकास : काज तँ बहुत अछि। बड़वढ़िया नहि छह मास तँ साल भरिमे सभ काज भइये जाएत।

रामविलास : हँ, से किअए ने हैत।

विकास : भने दुनू गोटे, एहि साल भरिमे, अप्पन-अप्पन काज साल भरिक भीतर पूर्ति कऽ लेब। बिबाह तँ अखन कइये लिअ, विदागरी अगिला साल करब। मुदा दुरागमनोक विधि समपने कऽ लेब। अखन कनियाँकेँ अप्पन सीमा पार कऽ घुमा लेब। विवाहक काज तँ समपन्ने बुझू।

समाप्त।